—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2005 वर्ष 4 अंक 1

मुस्लिम पर्सनल ला मुसलमानों की शरीअत व मजहब का जुज़ है और वह क़ुर्आन व हदीस से साबित है।

सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

• इस्लामी सलाम	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
• हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	8
• काजी अबू हाजिम की न्यायिक कूट नीति	डा० मु० इज्तिबा नदवी	10
• सच्चा राही में छपने वाले कुछ संकेतों	इदारा	13
• समुद्र का कहर	मौलाना अब्दुल करीम पारेख	14
• औरत और समाज	मौ० मु० सऊद कासिमी	15
• सीरतुन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	अल्लामा शिबली नोमानी	16
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	20
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	22
• गाजर	दीहाती मुआलिज से	24
• आयतुल कुर्सी का महत्व	मास्टर लतीफ़ अह़मद	25
• जिन्न और इन्सान में शादी	अबू मर्गूब	26
• अल्लाह निकट है	अब्दुर्रशीद खैरानी	29
• कहां मिलती है यह दौलत	खैरून्निसा बेहतर	29
• जमाने की हालत	अमतुल्लाह तस्नीम	29
• उम्मुल मोमिनीन हजरत हफ़्सा	सादिका तस्नीम	30
• घरेलू जिन्दगी में मर्द की हैसियत	इदारा	32
• अल्लाह का शुक्र	इदारा	33
• इस्लामी लिबास	मो० नईम अख्तर	34
• इस्लाम और मानव अधिकार	मुफ्ती इहतिशामुल हक	35
• अरब खाड़ी का एक देश बहरैन	मु० गुफरान नदवी	38
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

❑❑❑

इस्लामी सलाम

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

हर मुसलमान को ता़लीम दी गई कि जब वह अपने भाई से मिले तो सलाम करे या़नी कहे अस्सलाम अ़लैकुम जिस का मतलब है, अल्लाह की सलामती हो तुम पर, सुनने वाला इन अल्फ़ाज़ को लौटा दे उससे पहले 'व' बढ़ा दे और कहे व अ़लैकुमुस्सलाम यह वही अस्सलामु अलैकुम है व बढ़ाया फिर अलैकुम जो बाद में था पहले ले आए अलैकुम का 'म' जब अस्सलाम से मिला तो अरबी काअ़िदे (नियम) से अ गिर गया और 'म', 'उ' की मात्रा के साथ 'स' से मिल गया।

क़ुर्आन मजीद में है कि जब तुम को कोई सलाम करे तो उससे अच्छे अल्फ़ाज़ में जवाब दो या वही अल्फ़ाज लौटा दो या़नी कहो व अ़लैकुमुस्सलाम, व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू।

एक ह़दीस में आता है कि ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने कुछ सह़ाबा के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आया और अस्सलामु अ़लैकुम कहा, आप ने जवाब दिया और वह बैठ गया आपने फ़रमाया दस, फिर दूसरा शख़्स आया और उसने कहाः अस्सलाम अ़लैकुम व रह़मतुल्लाहि, आप ने जवाब दिया और वह भी मजलिस में बैठ गया आपने फ़रमाया बीस, फिर तीसरा शख़्स आया उसने कहा अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू, आपने सलाम का जवाब दिया और वह बैठ गया, आप ने फ़रमाया तीस (तिर्मिज़ी)

इससे मा़लूम हुआ कि सिर्फ़ अस्सलाम अ़लैकुम कहने वाला दस नेकियां पाता है, व रह़मतुल्लाहि बढ़ा कर सलाम करने वाला बीस नेकियां पाता है, और वरह़मतुल्लाहि व बरकातुहू बढ़ा कर सलाम करने वाला तीस नेकियां कमाता है। लिहाज़ा अगर्चि ज़रूरी नहीं है, लेकिन इन ज़ाइद अल्फ़ाज़ के इस्तिअ़माल से हम अपनी नेकियां बढ़ा सकते हैं। इस से यह भी मा़लूम हुआ कि सलाम के जवाब में जो वही अल्फ़ाज़ लौटाएगा और जो व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू बढ़ाकर जवाब देगा दोनों बराबर नहीं हो सकते।

यहाँ एक अहम बात की तरफ़ तवज्जूह दिलाना ज़रूरी है कि कोई शख़्स तुम को सलाम करे तो जवाब दो यह न कह बैठो कि तू मोमिन नहीं है। सूर–ए–निसा की आयत न० ९४ में यही बताया गया है। बड़े ह़ैरत की बात सुनाता हूँ, मैं एक बार बस से सफ़र कर रहा था एक शख़्स को देखा जो कुर्ता, पायजामा सद्री, टोपी, मोजों जूतों में थे, बड़ी सी काली दाढ़ी थी। ब ज़ाहिर मौलवी लग रहे थे। मेरी दाढ़ी सफ़ेद थी, वह मेरे बेटे की उ़म्र के थे, सामने आए तो ख़याल हुआ मुझे बूढ़ा समझ कर सलाम करेंगे लेकिन उन्होंने सलाम न किया, मैं ने सलाम किया तो वह दूसरी जानिब देखने लगे और एक सीट पर बैठ गये मेरी तरफ़ देखना भी गवारा न किया, बाद में मा़लूम हुआ कि उनको जब तक उनकी कसौटी पर किसी के सुन्नी होने की तस्दीक़ न हो जाए वह न उसे सलाम करते हैं न उसके सलाम का जवाब देते हैं।

ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब तक ईमान न लाओगे जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते और जब तक आपस में मह़ब्बत न हो ईमान नहीं साबित हो सकता तो क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊँ कि जिस पर अ़मल करने से आपस में मह़ब्बत पैदा हो जाए वह यह है कि

आपस में सलाम को रिवाज दो।(मुस्लिम)

पस चाहिये कि जो भी आप को नज़र आए और मुसलमान मालूम हो फ़ौरन सलाम कीजिये इसलिये कि पहल करने वाला ज़ियादा सवाब पाता है। अब अगर बाद में मालूम हो कि वह ग़ैर मुस्लिम था तो आप की कोई पकड़ न होगी। अलबत्ता अगर यक़ीन से मालूम हो कि ग़ैर मुस्लिम है तो मुसलमानों के सलाम से फ़र्क़ कीजिये और आदाब अर्ज़, गुड मार्निंग जैसे अल्फाज़ से उसका इस्तिक़्बाल कीजिये लेकिन प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते जैसे अल्फाज़ मत इस्तिअ़माल करें कि इन के मा़ना हैं, हम आप के सामने झुकते हैं, या आप को सजदा करते है, और यह हमारी शरीअ़त में मनअ़ है। अगर कोई ग़ैर मुस्लिम आप को अस्सलामु अ़लैकुम कहे तो आप जवाब दें और आप मोमिन नहीं हैं, न कहें।

एक रिवायत में है कि एक आदमी ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुवाल किया कि इस्लाम में कौन सी बात बिहतर है? हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया खाना खिलाना और सलाम करना ख़्वाह किसी से पहचान हो या न हो।(बुखारी)

जब किसी भाई से मुलाक़ात हो तो सलाम करना सुन्नत है पहले करने वाला ज़ियादा सवाब पाएगा लेकिन चाहिये कि छोटा बड़े को सलाम करने में पहल करे। मगर सलाम का जवाब देना वाजिब है और बाज ने फ़र्ज़ कहा है। सलाम का जवाब न देने वाले पर बड़ा गुनाह होगा।

अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात हो सलाम करें, फिर अपने अपने काम पर चले गये फिर मुलाक़ात हुई तो फिर सलाम करना चाहिये चाहे दिन में कई बार हो।

हुक्म है कि बिग़ैर इजाज़त और सलाम के किसी घर में दाख़िल न हो।

क़ुर्आने मजीद में है कि जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों पर सलाम करो। यह ख़ैर व भलाई की दुआ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बरकत वाली और बहुत अच्छी हैं। (२४:६१)

सलाम फ़िरिश्तों की सुन्नत है क़ुर्आने मजीद में हैं: क्या तुम को इब्राहिम अलैहिस्सलाम के इ़ज़्ज़त वाले मेहमानों की खबर पहुंची? जब वह उन पर दाख़िल हुए तो सलाम कहा तो इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने भी सलाम कहा या़नी सलाम का जवाब दिया।(५१:२४,२५)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने जब आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि जाओ इन लोगों को सलाम करो और जो तुम को जवाब दें, ग़ौर से सुनना कि यही सलाम तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए होगा। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ ले गये और कहा अस्सलामु अ़लैकुम, फ़िरिश्तों ने जवाब दिया अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाहि (फ़िरिश्तों ने रह़मतुल्लाहि बढ़ा दिया) (बुखारी व मुस्लिम)

सलाम के मअ़ना:

अस्सलामु अलैकुम का मतलब हुआ तुम पर अल्लाह की सलामती हो, अल्लाह की सलामती में हर रंज, हर तक्लीफ़, हर दुख, हर मुसीबत, हर आफ़त हर नुक़्सान या़नी जिस चीज़ से इन्सान को तक्लीफ़ हो या उस को घाटा हो सबसे बचाव शामिल है, बड़ी ही जामिअ़ (व्यापक) दुआ़ है। यही दुआ़ अ़लैहिस्सलाम कह कर फ़िरिश्तों को दी जाती है, यही दुआ़ अंबिया व रूसुल के लिये अ़लैहिमुस्सलाम कह कर की जाती है। यही दुआ़ बड़े से बड़े बुजुर्गों को अस्सलामु अलैकुम कह कर दी जाती है। और उनकी तरफ से व अलैकुमुस्सलाम से अच्छी और कोई दुआ़ नहीं। इन्सान के लिये जो भी दुआ़ की जाए सलाम में सब मौजूद है। चाहे जितने बड़े बुज़ुर्ग की कब्र पर हाज़िर हों अल्लाह की तरफ़ से यही हुक्म है कि उन के लिये कम से कम अस्सलाम

(शेष पृष्ठ १३पर)

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

चुग़ली खाना

जो चुग़ली खाता फिरता है।(अल्क़लम:११)

चुगुलखोर का काम यह है कि दो आदमियों के दर्मयान झूठी सच्ची बातें बयान कर के एक दूसरे के खिलाफ भड़काए, जो यह काम करता है वह खुदा के नज़दीक बहुत ज़लील है।

एक बार हुजूर (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मैं तुम्हें बताऊँ कि सब से बुरे लोग कौन हैं। फिर खुद ही फरमाया जो चुग्लियां खाते फिरते हैं और दोस्तों के आपस के तअल्लुकात ख़राब करते है।

एक मर्तबा हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का गुज़र एक कब्रिस्तान के पास से हुआ तो फरमाया कि इन में से एक पर इसलिये अज़ाब हो रहा हे कि वह चुग्ली खाता फिरता था।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का हुक्म था कि मेरे अस्हाब में से कोई मुझ तक किसी की बात न पहुंचाये क्योंकि मैं यह चाहता हूँ कि तम्हारे पास आऊं तो मेरा दिल साफ रहे।

कुर्आन मजीद ने चुगल खोरों के फ़ित्ने से बचने के लिये एक बड़ा अच्छा इलाज यह बताया है कि इस किस्म के लोगों की बात ही न मानी जाए फ़रमाया:

और तू ऐसे का कहना न मान जो बहुत कसमें खाता है, ज़लील है, (लोगों पर) आवाज़े कसा करता है चुग़लियां खाता फिरता है। (अल्कलम:१०,११)

ग़ीबत

और पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई न किया करो। (हुजुरात:१२)

एक हदीस में है कि लोगों ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि ग़ीबत किस को कहते हैं? आप ने फरमाया कि "तुम्हारा अपने भाई की उस चीज़ का ज़िक्र करना जिस को वह न पसन्द करे।"

लोगों ने कहा कि अगर मेरे भाई में वह ऐब मौजूद हो जिसको मैं बयान करता हूं तो, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अगर वह ऐब उस में मौजूद है तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर नहीं है तो तुम ने उस पर बुहतान लगाया।

ग़ीबत सिर्फ ज़बान से नहीं होती बल्कि हाथ पांव और आंख से भी होती है जैसे आदमी लंगड़ा है, उस की नक्ल उतारना और बनकर लंगड़ा कर चलना यह भी ग़ीबत है,

अल्लाह तआला ने ग़ीबत के लिये कहा है कि भला तुम में से कोई इस बात को गवारा करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इस से मालूम हुआ कि ग़ीबत करना ऐसा ही है जैसे कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए।

कुछ मौके ऐसे आ जाते हैं कि आदमी को दूसरों की बुराई करना पड़ती है उस वक्त यह गुनाह नहीं रहता वह मवाक़िअ आम तौर से यह है:—

१. मज़हबी और अख़लाकी बुराइयों से रोकने के लिये।

२. फ़त्वा लेने के लिये।

३. किसी की बुराई से दूसरे को बचाने के लिये।

४. एक आदमी किसी नक़्स के साथ मश्हूर हो गया और अब वह उस से चिढ़ता नहीं है। जैसे कोई लंगड़ा लंगड़ के नाम से मश्हूर हो गया।

५. हाकिम की शिकायत उस के अफ्सर के सामने करना हो।

६. खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वाले की बुराई बयान करना।

नसाइह

खुदा की बड़ाई के गुन गाओ तुम।
नसाइह ये हैं इनको अपनाओ तुम।।
जो लड़ जाएं भाई मिला दो उन्हें।
कहो मेरे भाई न टकराओ तुम।।
किसी की हंसी ना उड़ाओ कभी।
भले काम दुन्या में कर जाओ तुम।।
किसी को बुरा नाम हरगिज न दो।
न ग़ीबत से दिल अपना बहलाओ तुम।।
न तअना कभी दो न चुग़ली करो।
न भूले भी झूठी क़सम खाओ तुम।।
रहो टोह में तुम न हरगिज़ कभी।
कि पर्दा दरी को न अपनाओ तुम।।
घमन्ड कोई कुल पर करे जो यहां।
हो आदम की औलाद समझाओ तुम।।
हसद तुम न हरगिज़ किसी से करो।
पड़े जो मुसीबत न घबराओ तुम।।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी

आप (सल्ल०) की तवक्कुल की खिक्षा–

४१४. हजरत अबू बक्र रजि० से रिवायत है कि मैं ने मुश्रिकीन के कदम देखे हम गार में थे और वह हमारे सरों पर, मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) अगर उन में का एक भी अपने कदम के नीचे देखे तो वह हम को देख लेगा आप (सल्ल०) ने फरमाया ऐ अबू बक्र (रजि०) तुम को ऐसे दो के सम्बन्ध में क्या गुमान है जिन का तीसरा अल्लाह है। (बुखारी व मुस्लिम)

बिना हिसाब व किताब के जन्नत वाले–

४१५. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया मेरी उम्मत में से सत्तर हजार बिना हिसाब व किताब के जन्नत मे जाएंगे। वह बन्दगाने खुदा वह होंगे जो मन्त्र नहीं कराते और बद्शुगुनी नहीं लेते और अपने रब पर भरोसा करते हैं (बुख़ारी)

तवक्कुल की खुसूसियत–

४१६ हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० से रिवायत है कि जब हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग में डाले गये तो कहा " हस्बुनल्लाहु व नेअमलवकील" और हजरत मुहम्मद सल्ल० ने फरमाया जब लोगों ने कहा तुम्हारे लिए लोगों ने बड़ा सामान और बड़ी तैयारी की है उन से डरो तो उनका ईमान ज्यादा हो गया और उन्होनें कहा "हस्बुनल्लाहु व निअमलवकील" (बुख़ारी)

अल्लाह पर भरोसे की अहमियत और उसका मक़ाम–

४१७ हजरत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया जन्नत में कुछ लोग ऐसे दाखिल होंगे जिनके दिल चिड़यों जैसे होंगे (यानी अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा करने वाले जैसे चिड़ियां कुछ जमा नहीं करतीं) सुबह को वह भूके पेट निकलती है और शाम को भरे पेट वापस आती है।(मुस्लिम)

४१८. हजरत उमर बिन खत्ताब रजि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को फरमाते हुए सुना है कि अगर तुम अल्लाह तआला पर वैसा भरोसा करो जैसा कि हक़ है तो तुम को वह उस तरह से रिज़्क अ़ता करेगा जैसे चिड़ियों को अता करता है सुबह खाली पेट निकलती है और शाम को आसूदा और भरे पेट वापस होती है। (तिर्मिजी)

अल्लाह वालों की बरकत–

४१६ हजरत अनस बिन मालिक (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में दो भाई थे उन में एक रसूलुल्लाहु (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर होते थे और दूसरे कारोबार करते थे कारोबार करने वाले भाई ने अपने दूसरे भाई की जो हजरत मुहम्मद सल्ल० के पास हाजिर रहते थे शिकायत की कि यह कारोबार में हाथ नहीं बटातें हैं आप (सल्ल०) फरमाया हो सकता है तुम को इन्हीं की वजह से रोज़ी मिलती है।(तिमिर्जी)

दुनिया की दो आजमाइशें–

४२० हजरत अबू सईद खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया दुनिया मीठी और सब्ज़ है (अर्थात दूनिया बड़ी प्यारी और पुर कशिश है) अल्लाह तुम को उस में जानशीं बनाएगा और देखेगा कि तुम कैसे अमल करते हो, दुनिया से बचो और औरतों से बचो पहला फितना इस्राईल में औरतों की वजह से पैदा हुआ। (मुस्लिम)

नेकी हर हाल में फायदेमन्द है–

४२१ हजरत अबू जूर औ हजरत मआज़ बिन जबल रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया हर हाल में अल्लाह से डरो कोई बुराई हो जाए तो तुरन्त नेकी करो वह इस को मिटा देगी और लोगों से अच्छे अख्लाक से पेश आओ। (तिमिर्जी)

जन्नत व जहन्नम में ले जाने वाली चीज़ें–

४२२ हजरत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पुछा गया कि कौन सी चीज़ लोगों को सब से ज्यादा जहन्नम में ले जाने वाली है आप (सल्ल०) ने फरमाया मुँह और शर्मशाह आप (सल्ल०) से पूछा गया कि कौन सी चीज़ लोगों को जन्नत में ले जाने वाली है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का लिहाज़

और अच्छे अख़्लाक (तिमिर्जी)

शक वाली चीजों से बचना जरूरी है–

४२३ हजरत मआज़ बिन बशीर (रजि०) से रिवायत है कि मैंनें रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फरमाते हुए सुना, हलाल, खुला और साफ है और हराम भी खुला और साफ है इन दोनों के कुछ दर्मियान कुछ चीजें मुश्तबः (सन्देहयुक्त) है जिनको बहुत से लोग नहीं जानते (कि हलाल है कि हराम है) तो जो शख़्स (अपने को) सन्देहयुक्त चीजों से बचा लेगा तो उस ने अपनी इज्ज़त व आबरू को बचा लिया और जो सन्देहयुक्त चीजों में पड़ा वह हराम में मुब्तला हुआ जैसे शाही चरागाह के करीब चराने वाला खतरा में होता है कि कहीं उसका जानवर उसके अन्दर न दाख़िल हो जाए सुन लो हर बादशाह की एक चरागाह होती है सुन लो अल्लाह की चरागाह हराम व हलाल के अन्देशे हैं और सुन लो जिस्म के अन्दर एक लोथड़ा है जब तक वह सही और दुरूस्त रहेगा पूरा जिस्म दुरूस्त रहेगा और वह ख़राब हो जाएगा तो पूरा का पूरा जिस्म खराब हो जायेगा और सुन लो वह दिल है। (बुखारी व मुस्लिम)

दिल अच्छे और बुरे को बताता है–

४२४ हजरत वाबस्ता बिन मअबद (रजि०) से रिवायत है फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में हाजिर हुआ नबी करीम (सल्ल०) ने फरमाया तुम नेकी के सम्बन्ध में पूछने आये हो? मैंने कहा– जी– तो आप (सल्ल०) ने फरमाया (किसी काम के अच्छे या बुरे होने के सम्बन्ध में) अपने दिल से पूछो जिस काम से अक्ल और दिल मुतमईन (सन्तुष्ट) हों, वह भलाई व नेकी है और जिससे नफ्स मुतमइन न हो ओर दिल में खटके वह गुनाह है चाहे लोग फत्वा दें और दुरूस्त कहें। (बुखारी, मुस्लिम)

मुत्तक़ी (परहेजगार) बनने के लिए कुछ जाइज़ कामों को छोड़ना–

४२५ हजरत अताया बिन उरवा (रजि०) से रिवायत है फरमाते है आप (सल्ल०) ने फरमाया बन्दा उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह छोड़ न दे उसको जिसमे कोई हर्ज नहीं है (केवल) इस डर से कि कहीं इसमें हर्ज हो। (तिर्मिजी)

शक वाली चीजों से एहतियात–

४२६. हजरत हसन बिन अली (रजि०) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की यह बात याद है जिसमें शक हो उसको छोड़ दो उस को अपनाओं जिसमें शक न हो। (तिर्मिजी)

पसंदीदा अमल वह है जो बराबर किया जाए–

४२७ हजरत आइश रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया आमाल में एतिदाल (सन्तुलन) व हमेशगी इख्तियार करों यह समझ लो कि तुम में से किसी का अमल उसको जन्नत में नहीं दाखिल करेगा। अल्लाह तआला को सब से ज्यादा वह अमल पसंद है जो लगातार किया जाए चाहे वह थोड़ा ही हो। (बुखारी)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आमाल–

४२८ हज़रत अलकमा बिन कैस से रिवायत है कि उन्होंने हजरत आइश रजि० से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के अमल के बारे में पूछा कि अमल के बारे आप का क्या मामूल रहा करता था क्या आप (सल्ल०) ने अपने कुछ मामूलात को दिनों के साथ खास कर रखा था? हजरत आईशा (रजि०) ने फरमाया नहीं रसूलुल्लाह (सल्ल०) जो अमल करते थे वह लगातार करते थे और तुम में कौन वह, कर सकता है जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) कर लेते थे। (बुखारी)

तहज्जुद की कजा–

४२९ हजरत आइशा (रजि०) से रिवायत है कि दर्द व तकलीफ या किसी और वजह से जब आप (सल्ल०) की तहज्जुद की नमाज छूट जाती थी तो आप सल्ल० दिन में बारह रकअते पढ़ लेते थे। (मुस्लिम)

रात का मामूल छूटने का बदल–

४६० हजरत उमर बिन खत्ताब से रिवायत है कि मुझ से अल्लाह के रसूल ने फरमाया जिसका रात का मामूल छूट जाए और फिर वह फज्र और जुहू की नमाज़ के दर्मियान पूरा कर ले तो वैसा ही अज्र मिलेगा जैसा कि रात में पढ़ा हो। (मुस्लिम)

ज्यादा सवाब हासिल करने की शर्तें–

४३१ हजरत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है फरमाते है एक शख़्स हुजूर (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल कौन सा सद्कः ज्यादह मूजिबे अज्र है? आप (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया तुम सद्कः करो इस हाल में कि तुम तन्दुरूस्त व तवाना

(शेष पृ. ६ पर)

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अ़ली हसनी

विधवा का दूसरा विवाह तथा भारतीय मुसलमानों का विशिष्ट मामला

विधवा का दूसरा विवाह, धार्मिक दृष्टिकोण से और मुसलमानों के समाज तथा रिवाज में कभी बुरा एवं आपत्तिजनक कार्य नहीं समझा जाता था। यह उनके नबी की सुन्त थी और प्रत्येक युग में महान विद्वान, बुजुर्ग, महानुभाव एवं विराट सम्राट निःसंकोच विधवा स्त्रियों से स्वयं विवाह करते थे और अपनी विधवा बहनों तथा बेटियों का दूसरा विवाह करते थे। हिन्दुस्तान की कई तैमूरी महिलाओं तथा मुग़लिया खानदान की कई बेगमात ने विधवा होने के पश्चात दूसरा विवाह किया और इतिहास में उनके नाम सम्मान तथा आदर के साथ लिये गये हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, मुहम्मद शाही काल (१७१९–१७४८ ई० जैसा कि ख्वाफ़ी खां के उल्लेख से ज्ञात है) से भारत के रईस तथा उच्चकोटि के घरानों में इसको बुरा एवं दूषित कार्य और स्त्री की पतिव्रता एवं सम्मान के विरूद्ध समझा जाने लगा। यहां तक कि जो भी इसका साहस करता था उसका खानदान से बहिष्कार कर दिया जाता था और उसे बुरी तथा अपमानित दृष्टि से देखा जाता था। कभी–कभी तो स्त्री एवं पुरूष दोनों को नगर छोड़ने पर बाध्य होना पड़ा है। तेरहवीं शताब्दी हिजरी का प्रथम चौथाई तथा उन्नीसवीं शताब्दी ईसवीं के आरम्भ में हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध धर्म सुधारक एवं नेता हजरत सय्यद अहमद शहीद रायबरेलवी ने इस इस्लाम के प्रतिकूल विचारधारा के विरूद्ध सुधारात्मक आन्दोलन आरम्भ किया और स्वयं इस रस्म को तोड़कर और उनके दूसरे साथियों एवं श्रद्धालुओं ने व्यावहारिक रूप से इस निर्जीव सुन्नत को जीवित और इस विचारधारा का कार्यान्वित रूप से खण्डन किया, कि यह क्रिया सौजन्य एवं शिष्टता और मान, मर्यादा की भावना के विरूद्ध है। उस समय से मुसलमान खानदानों में यह क्रिया घृणाप्रद तथा असंगत नहीं रही जितनी एक दो शताब्दी पूर्व थी। अब भी यद्यपि बहुत सी मुसलमान विधवायें अपनी इच्छा अथवा किसी विवशता के कारण दूसरा विवाह किये बिना रहती हैं परन्तु दूसरे विवाह का अच्छा खासा रिवाज पाया जाता है।

सलाम करने का रिवाज तथा उसके विभिन्न रूप

मिलने जुलने, आने जाने में सलाम का रिवाज है। यह मुसलमानों का अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तरधार्मिक सलाम है। सलाम करने वाला "अस्सलाम अलैकुम" कहता है, जिसका अर्थ है– "तुम पर खुदा की ओर से सलामती हो अर्थात् ईश्वर तुम्हें स्वस्थ एवं सकुशल रखे"। इसका उत्तर है, व–अलैकुम्मस्सलाम" अर्थात तुम पर भी सलामती हो। अनेक नागरिक क्षेत्रों में विशेषकर अवध के पुराने क़स्बों तथा लखनऊ के पुराने खानदानों में सलाम के बजाय "आदाब अर्ज़" का रिवाज है। छोटे बड़ों को झुककर तसलीमात अर्ज करते हैं, और कई बार झुककर आदाब अर्ज बजा लाते है। इसको फ़र्शी सलाम भी कहा जाता है। हैदराबाद में अब भी इसका रिवाज है। बड़े, छोटों के इस सलाम के उत्तर में "जीते रहो" कहते है, या तसलीम कहकर जवाब देते हैं, (यह तरीक़ा सुन्नत के खिलाफ़ और झुककर सलाम या आदाब करना मनअ़ है) सलाम के बाद "मुसाफहा" का भी रिवाज है। कुछ लोग दोनों हाथों से करते हैं और कुछ एक हाथ से। अब एक हाथ से मुसाफ़हा करने का अधिक प्रचलन है। यात्रा करके आने की दशा में और ईद, बकरईद में "मुआनका" का भी प्रचलन है।

उठते बैठते खुदा का नाम

मुसलमानों की ज़बान पर कुछ ऐसे वाक्य एवं शब्द सहज रूप से चढ़े हुए हैं और वह उनके दैनिक जीवन में ऐसे प्रविष्ट हैं कि आलिम तथा जाहिल, छोटे, बड़े, स्त्री तथा पुरूष और वह लोग भी जिनमें धार्मिक प्रभाव का आभाव होता है, उठते बैठते उनको अदा करते हैं। इन वाक्यों तथा शब्दों में खुदा की बड़ाई और वहदानियत की झलक पाई जाती है और इनकी वजह से अनायास भी खुदा का नाम मुसलमानों की ज़बान पर आता रहता है। यथा– कृतज्ञता अथवा कृपा होने के अवसर पर "अल–हम्दु–लिल्लाह" (सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है), प्रसन्नता या प्रसन्नता प्रकट करने के अवसर पर "माशा अल्लाह" (अल्लाह

की मेहरबानी और इरादे से), किसी कार्य को वचन देते समय "इन्शा अल्लाह" (यदि खुदा चाहेगा), किसी दुर्घटना अथवा हानि के अवसर पर "इन्ना-लिल्लहि-व-इन्ना-इलैहि-राजिऊन"(हम सब अल्लाह ही के है और अल्लाह ही के पास पलट कर जाने वाले है), अप्रसन्नता व्यक्त करने या चिन्ता के अवसर पर "ला-हौल-व-ला-कूवता-इल्ला-बिल्लाहि" (किसी बुरी वस्तु से सुरक्षा और किसी अच्छी वस्तु की शक्ति अल्लाह के आदेश के बिना नहीं), विस्मय अथवा आश्चर्य के अवसर पर सुबहान-ल्लाह (अल्लाह दोषरहित एवं पवित्र है), मुसलमान जब भोजन करना आरम्भ करता है तो "बिस्मिल्लाह" (अल्लाह के नाम से), और खा चुकता है, तो "अल-हम्दु-लिल्लाह" कहता है। यदि कोई अपने साथ खाते समय दूसरे को आमन्त्रित करता है और दूसरा व्यक्ति किसी कारणवश सम्मिलित नहीं होना चाहता है, तो उत्तर इन शब्दों में देता है, "बारकल्लाह" (अल्लाह बरकत दे), किसी को छींक आये तो वह "अलहम्दु-लिल्लाह" कहता है, पास वाला अर्थात इन शब्दों को सुनने वाले कहता है, "यर हमुक-ल्लाह " (अल्लाह तुम पर दया करे) और छींकने वाला फिर इसके उत्तर में कहता है, "यहदी-कुमुल्लाह-व-युसलेह बालकुम" (अल्लाह तुमको सीधे मार्ग पर चलाये और तुम्हारी दशा ठीक रखे)

आने जाने वालों का सत्कार एवं उसके तरीके करने की सामान्य प्रथा है और यह हिन्दुस्तान की पुरातन सभ्यता है, जिसका उल्लेख आठवीं शताब्दी हिजरी (चौदहवीं शताब्दी मसीही) के बुजुर्गों की सभाओं तथा खानकाहों (गुरू कुलों) के विवरण में भी आता है। ऐसे तो इसका रिवाज समस्त भारत वर्ष में है परन्तु उत्तर प्रदेश, बिहार तथा दक्षिण में अधिक है। अवध (वर्तमान उ०प्र०) में पान की गिलोरियां अति कोमलता एवं मृदुलता से बनाई जाती है और उनको गिलोरीदान में अति सुन्दरता से सजाया जाता है। पान की डिबियां भी सुन्दर, चित्रित तथा विभिन्न आकार की होती है। पान के बटवों के विभिन्न काट और नमूने प्रचलित हैं और उनमें भी तराश खराश हुई है। तम्बाकू भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रयोग की जाती है और उसे सुगन्धित, तेज तथा मध्यवर्ती बनाने में यहां बड़े बड़े प्रयोग किये गये हैं और विभिन्न प्रकार का तम्बाकू जिनको जर्दा तथा सुर्ती भी कहते हैं, प्रचलित हैं, इसमें लखनऊ ने बड़ा नाम पैदा किया है। हुक्के का रिवाज कम होता जा रहा है अधिकतर उसका स्थान सिगरेट तथा सिगार ने ले लिया है, फिर भी वह पुरातन सभ्यता तथा रहन-सहन का एक प्रतीक है, और इसमें बहुत सी पुरातन कथायें, शिष्टाचार तथा सभ्यताएं सम्बद्ध हैं।

इत्र एवं सुगन्ध का शौक़ और उसमें विशिष्ट स्थान

इत्र के प्रति हिन्दुस्तानी मुसलमानों की विशेष अभिरूचि रही है और शरीअत एवं सुन्नत ने भी उनकी इस अभिरूचि में योगदान दिया है। हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने इत्र साज़ी में एक विशिष्ट स्थान पैदा किया है और भिन्न भिन्न प्रकार के इत्रों का अविष्कार किया। इसी कारण इस सम्बन्ध में भारतवर्ष ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

पृष्ठ ७ का शेष

हो (माल की) लालच हो फ़क्र का अन्देशा हो, मालदारी की चाहत हो और तुम (इस काम को) टालते रहो कि जब तुम को मौत आने लगे तो तुम कहो कि फुलाँ के लिए इतना है और (फुलाँ के लिए इतना वह तो (अब इस सूरत में) फुलाँ का हो गया।) (तिर्मिजी)

सात खतरनाक चीजें–

४३२ हजरत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फरमाया सात चीजों से पहले आमाले खैर में जल्दी करो या तो ऐसे फ़क्र से दो चार होने वाले हो जो सब कुछ भुला देगा या ऐसी मालदारी के इन्तिजार में हो जो तुम्हें सरकशी में डाल देगी या ऐसी बीमारी आने वाली हो जो निकम्मा बना देगी या अक्ल को खो देने वाला बुढ़ापा अचानक मौत या दज्जाल का इन्तिजार कर रहे हो जो बद्तरीन चीज़ है, या कियामत के इन्तिजार में हो कियामत तो बहुत भयानक और न काबिलें बर्दाश्त है। (तिर्मिजी)

(अनुवाद मुहम्मद सरवर नदवी फारूकी)

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street
Akbari Gate Lucknow

काज़ी अबू हाज़िम की न्यायिक कूटनीति

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

अब्बासी ख़लीफा अमीरूल मोमिनीन मोअतज़िद बिल्लाह के समय में बग़दाद के क़ाज़ी हनफी मसलक के प्रमुख और प्रख्यात विद्वान अब्दुल हमीद बिन अब्दुल अज़ीज़ अबु हाज़िम (रह०) थे। राजधानी बग़दाद में क़ाज़ी नियुक्त किए जाने से पहले शाम और कूफ़ा के क़ाज़ी रह चुके थे। बड़े न्याय प्रिय, सच्चे, सूझ बूझ वाले और चतुर थे। हक़ और न्याय के मामले में कोई पक्षपात नहीं करते थे।

एक बार अमीरूल मोमिनीन मोअतज़िद बिल्लाह के मंत्री ने अपनी जायदाद के पास स्थित एक अनाथालय की जायदाद खुद खरीद लेने के लिए दबाव डाला तो क़ाज़ी अबू हाज़िम ने मंत्री को लिखाः 'अल्लाह तआला मंत्री महोदय को सम्मान प्रदान करे इस बारे में मेरी विनती है कि आप मेरे द्वारा हक़ व इन्साफ़ की रक्षा करायें अन्यथा मुझे इस पद से अलग कर दें। वस्सलाम"

देखिये यही क़ाज़ी अबू हाज़िम अपनी अदालत में मौजूद हैं। दावे दारों की भीड़ है, क़ाज़ी साहब नज़र उठाते हैं तो रजिस्ट्रार के पास एक सम्मानित, प्रतिष्ठान, सुन्दर और उजले वस्त्र पहने एक अधेड़ उम्र के बुजुर्ग खड़े हुए है। उनके व्यवहार से बनावट साफ झलक रही है। जब इस प्रतिष्ठित बुजुर्ग का नम्बर आया तो क़ाज़ी साहब अबू हाज़िम के सामने आकर अपना दावा प्रस्तुत कियाः अमुक नवजवान के जिम्मे मेरे एक हजार दीनार देना बाक़ी है, उसने अमुक शरअी जरूरत के लिए कर्ज़ लिया था, मगर उसकी वापसी में वह टाल मटोल कर रहा है, इसलिए मेरी मांग है कि उसे बुलाकर उससे मेरा कर्ज़ वापस अदा करा दिया जाए और दंड दिया जाए।

बुजुर्ग का बयान और कर्ज़ के बारे में प्रस्तुत विवरण सही मालूम हो रहा था लेकिन काज़ी अबू हाजिम को यह दावा न जाने क्यों संदिग्ध नजर आया। उन्होंने दावे दार के बयान पर सन्तोष प्रकट नहीं किया। परन्तु अदालती नियम के अनुसार उन्होंने उस नवजवान को बुलाया। वह हाजिर हो गया। वह बड़ी अच्छे कपड़े पहने हुए था।

देखने में सुन्दर, धनी और आज्ञाकारी लगता था। काज़ी ने उस के विरूध दावे के बारे में उसे बताया तो उसने दावेदार की बात स्वीकार करली मगर कर्ज़ की वापसी में अपनी विवशता प्रकट की। काज़ी ने दावा करने वाले से नवजवान के बयान का हवाला देकर पूछा कि अब वह क्या चाहता है? तो उसने कहा कि मेरी मांग है कि इसे उस समय तक कैद रखा जाय जब तक कि मेरी सारी रकम वापस न मिल जाए।

काज़ी ने उनकी इस बात को नहीं माना। उस बुजुर्ग ने अपनी मांग पर आग्रह किया और कहा कि यही एक साधन है, जिससे मेरी रकम वसूल हो सकती है।

काज़ी ने दानों को बड़े ध्यान से देखा और आदेश दिया कि तुम दोनों इन्तजार करो। मैं तुम्हारे मुकदमे पर विचार करूंगा। उस समय बग़दाद के उच्च कोटि के विद्वान मुकर्रम बिन अहमद वहां मौजूद थे। उन्होंने काज़ी अबू हाजिम के इस फैसले पर आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि मामला तो पूरी तरह स्पष्ट है फिर विलम्ब का क्या कारण है?

काज़ी साहब ने जवाब दिया कि दारूल क़ज़ा में इतना समय गुज़रने के बाद वादी और प्रतिवादी के बारे में बहुत अधिक अनुभव हासिल हो गया है और सत्य व असत्य में भेद करने की महारत पैदा हो गयी है। इस आधार पर बहुत ही कम गलती होती है। उस नवजवान के इतनी उदारता व आसानी से दावे को मान लेने से मेरे दिल मे सन्देह पैदा हो गया है कि वह झूठ बोल रहा है। सम्भव है कि मामला कुछ और हो। दोनों के बीच आपसी बेतकल्लुफी, उनकी शालीनता, सभ्यता और धन दौलत की अधिकता, उत्तम व सुन्दर लिबास और निसंकोच दावे को मान लेना क्या कुछ अटपटा सा नहीं लगता है?

अभी काज़ी अबू हाज़िम अदालत में ही थे, ममुकर्रम बिन अहमद भी मौजूद थे कि अदालत के कर्मचारी ने शहर के कुछ सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यापारियों के आने की सूचना दी और मुलाकात के लिए अनुमति चाही।

बग़दाद का एक सम्मानित और सफल व्यापारी काज़ी साहब अबू हाजिम

के सामने खड़ा था, परेशान और बेचैन, उसकी जबान से बड़ी मुश्किल से निकलाः खुदा काज़ी साहब को भलाई का सौभाग्य प्रदान करे। मैं अपने एक नव उम्र बच्चे की वजह से बड़ी परेशानी में पड़ गया हूं। मेरे पास से वह जितना माल व दौलत हासिल कर पाता है, वह अमुक व्यक्ति के घर नाचने गाने वालियों पर और रंग रलयों में उड़ा देता है। मैं जब उसे इस हरकत से रोकने की कोशिश करता हूं तो कोई ऐसा बहाना ढूंढ लेता है, जिसके नतीजे में मुझे उसका कर्ज़ अदा करना पड़ता है। आज वही आदमी एक हजार दीनार की मांग कर रहा है और मुझे यह खबर मिली है कि उसने काज़ी की अदालत में मुकदमा भी कर दिया है और मांग की है कि यदि मेरा बच्चा रकम न अदा कर सके तो उसे जेल भेज दिया जाए। इसके कारण मेरी उस की मां से भी कहा सुनी हो गई है और हमारा जीना मुश्किल हो गया है। यदि बच्चे को जेल भेज दिया गया तो मैं रकम की अदायगी पर मजबूर हूंगा। मुझे जैसे ही यह सूचना मिली मैं आ गया ताकि काज़ी साहब की सेवा में सही हालात स्पष्ट कर दूं।

व्यापारी ने जब अपनी बात खत्म की तो काज़ी अबू हाजिम ने अल्लामा अहमद बिन मुकर्रम की ओर देखा, मानो उनसे कह रहे हों कि फैसला न सुनाने का रहस्य समझ गये और इस नेक दिल बाप के विरूद्ध षड़यंत्र का भेद खुल गया या नहीं।

काजी साहब ने बूढ़े वादी और नवजवान प्रतिवादी को हाजिर करने का आदेश दिया। थोड़ी सी डांट डपट के बाद अन्दाजा हो गया कि बूढ़ा आदमी एक ऐसे अड्डे का मालिक है, जिसमें राग रंग का नाच गाना और अन्य बुरे काम होते थे। वहां नवयुवक जमा होते हैं। काज़ी ने उस युवक से बड़ी नरमी और मोहब्बत से बात की तो उसने कहा कि मै इस मक्कार बूढ़े के जाल में फंस गया हूं और यह भिन्न भिन्न बहानों से मुझसे दौलत हासिल करता रहता है।

इसके बाद काज़ी अबू हाज़िम ने उस बूढ़े से सवाल किया तो उसने भी मान लिया कि उसने नवजवान को प्रभावित करके उसे गलत रास्ते पर डाल दिया है और कर्ज़ वाला मामली भी उसने मेरे दबाव में ही मान लिया है।

काज़ी ने उस बूढ़े के अपराध और उसकी उम्र को ध्यान में रखते हुए सजा का फैसला सुनाया और बूढ़े के उस अड्डे को खत्म करके आम घोषणा करा दी कि लोग उसके धोखे का शिकार न हो। नवजवान को समझाया कि वह अपने बाप की आज्ञा का पालन करे और बेकार की बातों से तौबा करे।

सत्य व न्याय का उच्च उदाहरण

अफ्रीका का महान बादशाह इब्राहीम बिन अगलब हमेशा की भान्ति जुमेरात की सुबह अपने दरबार में आकर बैठा। नियमानुसार उनके पास ही काज़ी–उल–कजात (मुख्य न्यायधीश) और दीनी मामलों के अध्यक्ष शैख अब्दुल्लाह बिन गानम (प्रमुख मुफती) बैठै हैं, ताकि वे बादशाह को न्यायिक व धार्मिक मामलों में मश्विरा और निर्देश दे सकें। बड़े सरकारी अधिकारी, गवर्नर और बाहर से आए हुए ऐलची व प्रतिनिधि और सेना के अफसर दाएं हाथ पर अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठे हुए हैं। शाह इब्राहीम ने शासन से समबन्धित समस्याओं, बाहर से आने वाली सूचनाओं, सन्देशों, पत्रों और देश से सम्बन्धित रिपोर्टों के अवलोकन किया और आपसी विचार विमर्श से निमट कर दवाखाने के इन्चार्ज अबुल फरज सिक्का को बुलाया और कहा कि हिन्दुस्तान से मंगायी गयी दवाएं पेश करें।

कीरवान से आए हुए प्रतिनिधि मंडल के प्रमुख रबाह बिन इमरान को भी बुलाया ताकि वह हर दवा की विशेषताओं, गुणों और किसमों का विवरण प्रस्तुत करें। रबाह बिन इमरान ने दो घंटे तक उन दवाओं की विशेषताएं बताने के बाद, एक शीशी उठायी और बताया कि यह हिन्दुस्तान के जंगलों के खतरनाक सांपों से निकाला हुआ ज़हर है। इसकी एक बूंद बड़े से बड़े हाथी को मौत की नींद सुला देगी। काज़ी इब्ने गनम ने उसकी कीमत मालूम की तो रबाह ने बताया कि कीमत पांच सौ सुनहरे दीनार है। काज़ी इब्ने गानम ने रबाह के हाथ से वह शीशी इस तरह ली मानो वह उसे देखना चाहते है। बादशाह इब्राहीम ने उसे प्रशंसापूर्वक देखा और शाही मामलों में इस प्रकार का ज़हर का होना जरूरी समझा।

काज़ी साहब ने पूरे साहस और सच्चाई से काम लेते हुए कहा कि मुसलमान बैतुलमाल के धन को इस तरह बर्बाद होने की अनुमति कदापि न देंगे। हुकूमत के हित कितने ही कीमती क्यों न हों, उनकी सुरक्षा जहर और धोखे से कत्ल के द्वारा नहीं की जानी चाहिए। यह कहते हुए उन्होंने जहर

की शीशी फर्श पर पटख दी। वह चूर चूर होकर बिखर गयी और उसमें का जहर बनफशई संगमरमर के सुन्दर फर्श पर बह गया। यह देखकर बादशाह के चेहरे का रंग बदल गया और ऐसा लगा कि वह क्रोध से बिफर पड़ेगा लेकिन उसने क्रोध दबा कर अपने ऊपर काबू पा लिया और काज़ी इब्ने ग़नम से क्षमा याचना करते हुए कहा कि हो सकता है राज्य की कुछ महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को नजर में रखते हुए यह जहर खरीदा गया हो लेकिन उसने निश्चित रूप से तय कर रखा था कि खुदा की हराम की हुइ जगह पर उसे इस्तेमाल नहीं करेगा। अब तो किस्सा ही खत्म हो गया और तुरन्त यह मज्लिस खत्म करने का आदेश पारित किया। लोगों ने बादशाह के चेहरे से क्रोध, दुख और झुंझलाहट का अनुभव किया और भय व घबरहाट के माहौल में वापस लौटे। काज़ी साहब ने अपनी सवारी मंगायी और बड़े इत्मीनान से अपने घर चले गये। काज़ी साहब इशा की नमाज़ से पहले अपने मकान पर विद्वानों और अन्य जिम्मेदारों और अपने दोस्तों के साथ बैठे हुए थे। एक कारी कुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे। इसी बीच किसी के जोर जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनी। सेवक हांपता कांपता हुआ गया और दरवाज़ा खोला तो बादशाह का सचिव खड़ा है। उसने कहा बादशाह सलामत ने जामा मस्जिद में काज़ी साहब को तुरन्त बुलाया है। यह सुनकर सारे लोग परेशान हो गये और खतरा महसूस किया कि सुबह के साहसिक कार्य की सज़ा इस समय रात में दी जाएगी। यह भी हो सकता है कि जामा मस्जिद में काज़ी साहब को उनके पद से हटाए जाने की घोषणा की जाए या कोई इससे भी बड़ी सजा का आदेश सुनाया जाए क्योंकि बादशाह की नाराजगी का सब को पता लग चुका था।

काज़ी साहब के कुछ दोस्तों ने सुझाव दिया कि आप बादशाह के बुलावे से न जाएं बल्कि अपने कबीलों की शरण ले और रूपोश हो जाएं। लेकिन काज़ी अब्दुल्लाह बिन ग़ानम ने कहा कि उन्हें इन खतरों की कोई चिंता नहीं। उन्होंने सुबह जो कुछ किया वह केवल खुदा के आदेश का पालन और पूरी निष्ठा व ईमानदारी के आधार पर किया है इसलिए उन्हें न कोई भय है और न खतरा। अल्लाह ही मददगार है वही कामयाबी प्रदान करने वाला है। फिर आपने इस आयत की तिलावत की।

'ऐ ईमान वालों! यदि तुम खुदा से सहयोग करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें दृढ़ता प्रदान करेगा।

और पूरे आत्म विश्वास के साथ कहा: खुदा तआला निश्चित रूप से अपना वायदा पूरा फरमायगा। इसके बाद काज़ी साहब ने अपना जुब्बा पहना छड़ी ली और सेवक से कहा रोशनी लेकर आगे आगे चलो। काज़ी इब्ने ग़ानम बड़ी निर्भीकता के साथ बादशाह के सुरक्षा दस्तों, पहरेदारों और दरबारियों के बीच से गुजरते हुए जामा मस्जिद पहुंच गये और इमाम के पास पहुंच कर बैठना चाहा। बादशाह आगे बढ़ा और बड़ी गर्म जोशी से सलाम किया। काज़ी साहब को हैरत हुई। उन्होंने उसी गर्म जोशी के साथ सलाम का जवाब दिया और फिर दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद की नीयत बांध ली। इब्राहीम बिन अगलब काज़ी साहब की नमाज पूरी होने का इन्तजार करता रहा। नमाज़ से जैसे ही काज़ी साहब निमटे बादशाह उनके पास आकर बैठ गया और क्षमा चाही कि इतनी रात को कष्ट दिया। फिर उसने कहा:

मैं इशा की नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद पहुंचा तो अपने आप पर काबू न पा सका और गिर पड़ा। सोचा कि लोग मेरे इस तरह अचानक गिरने से यह न समझें कि मैं शराब के नशे में लड़खड़ा कर गिर पड़ा हूं। मैंने सोचा कि काज़ी साहब के द्वारा इस बात की स्पष्टीकरण करा दूं ताकि लोग विश्वास करलें कि मैंने शराब नहीं पी है।'

इसके बाद बादशाह ने काज़ी इब्ने ग़ानम से आदरपूर्वक आग्रह किया: इस तरह कार्यवाई कीजिये जैसे आप अपनी अदालत में करते हैं। पूरी तरह जांच करें और फैसला दें। यदि मैं दोशी ठहरूं तो मस्जिद से निकालने का मुझे हुक्म दें और यदि मैं निर्दोश ठहरूं, तो मेरी बेगुनाही की घोषणा कर दें। फिर कहा ऐ अबू अब्दुर्रहमान हमने केवल इस फैसले के लिए आपको कष्ट दिया है और कोई दूसरी बात नहीं थी।

काज़ी साहब ने बादशाह को अपने सामने आने का हुक्म दिया और अदालती कार्यवाही शुरू की। जब उनको विश्वास हो गया कि बादशाह ने शराब नहीं पी है, तब उन्होंने घोषणा कर दी और अल्लाह से दुआ की कि शाह के उच्च आचरण को और उच्चता प्रदान करे, उसे और अधिक सहन शक्ति दे तथा उसकी हर मामले मे सहायता करे, ताकि जीवन में वह सफलताएं पा सके।

नमाज़ के बाद बादशाह महल चला गया और काज़ी अब्दुल्लाह बिन ग़ानम अपने घर, जहां अनेक लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। काज़ी साहब ने उनको पूरी बात बताई और इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि बादशाह ने अपना क्रोध ठंडा करने के लिए जामा मस्जिद में इशा की नमाज़ अदा करने का इरादा किया और फिर मुझे बुलाकर अपनी ओर से दुर्भावना को दूर कराया। यह केवल खुदा की कृपा ही है।

सत्य व न्याय के इस सम्मान की बरकत से अगलबी बादशाह का अफ्रीका में बड़ी उन्नति मिली और इस्लाम और मुसलमानों को बड़ी सफलताएं मिलीं।

सच्चा राही में छपने वाले कुछ संकेतों के फुल फार्म

सल्ल० – या स०	सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
अ०–	अलैहिस्सलाम
रह०–	रहमतुल्लाहि अलैहि
रज़ि०–	रजियल्लाहु अन्हु
मु० –	मुहम्मद
मौ–	मौलाना

रहमतुल्लाहि अलैहा और रहमतुललाहि अलैहिम के लिए भी (रह०) ही लिखते हैं इसी तरह अलैहिमुस्सलाम के लिए भी (अ०) बनाते हैं। रजियल्लाहु अन्हा और रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए भी (रज़ि०) लिखते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

समस्त प्रशंसायें केवल अल्लाह के लिए हैं जो समस्त लोकों का पालन हार है। बड़ा दयालू है महान कृपालू है। बदला दिये जाने वाले दिन का स्वामी है। हे स्वामी हम तो तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से सहायता मांगते हैं ऐ हमारे स्वामी हम को सीधा मार्ग दिखा दे। उन लोगों का मार्ग जिन को आप ने पुरस्कृत किया, उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न भटक जाने वालों का। (आमीन)

अल्लाह से मांगने की यह वह विधि है जिसे अल्लाह तआला ने स्वयं अपने बन्दों को सिखायी है जो कुर्आन मजीद में पहली सूरत के रूप में अंकित है, जिसे सूर–ए–फातिहा कहते हैं। यह उसका भावार्थ है।

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

(पृष्ठ ४ का शेष)

अलैकुम या अहलल क़ुबूर अल्लाह की सलामती हो तुम पर ऐ क़ब्र वालो कहें। अगर एक ही क़ब्र है तो चाहें तो अहलल क़ुबूर न कहें और कहें तो कोई हर्ज भी नहीं। उन के लिये मग्फ़िरत की दुआ का हुक्म है। इसी दुआ का आम क़ब्रिस्तान में पढ़ने का हुक्म है। यहीं से यह बात भी वाज़िह हो जाती है कि क़ब्रों पर चढ़ावा चढ़ाना और साहिबे क़ब्र से कुछ मांगना इसका हुक्म मुफ्ती हज़रात जो भी दें मगर है यह ईजादे बन्दा। हम को चाहिये कि चाहे जिस की क़ब्र की ज़ियारत करें क़ब्र वालों को सलाम पेश करें उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ करें, उन को सवाब बख़्शें और अपनी मौत याद करें। आख़िर में हम कहते है वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ातिमुन्नबीयीन।

यदि मांगो तो केवल अल्लाह से मांगो यदि सहयोग चाहो तो केवल अल्लाह से सहयोग चाहो।

(हदीस)

0522-256005

Asif Bhai Saree Wale

M.A. Saree Bhandar

Manufacturer & Supplier of :

Chickan Sarees & Suit Pieces

In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

समुद्र का कहर

पदमभूषण मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब

समस्त संसार के स्वामी और हम सब के पालनहार के नाम से शुरू करके भारत वासियों को यह संदेश देते हैं कि हम सब अब खुद संभलने की कोशिश करें और अपने निर्माता को, अपने मालिक को अपने पैदा करने वाले को जानें, मानें।

२००४ के आखिर दिसम्बर में जो समन्दर में झकोला आया, प्रकृति के निर्माता के हिसाब से बहुत छोटा सा, लेकिन मानव मात्र के लिए बहुत बड़ा हादिसा हुआ, हजारों हजार लोग मारे गये। हजारों हजार लापता हैं।

इंडोनेशिया से होते हुये बहुत से मुल्कों समेत भारत के तट पर भी एक दो थपेड़े ऐसे आये कि तामिलनाडु हिल गया और दूसरे प्रान्तों में भी नुकसान पहुंचा। यह सब क्या हैं।

मानव को सोचना चाहिए इस धरती पर इन्सान का डेरा पड़ा हुआ है कि हम क्या कर रहे हैं। यह आसमान, सूरज, चांद, सितारे, हवा, बादल, पानी, इन्सान की पैदाइश, मौत और सौ साल के अन्दर एक जनेरेशन का पलट के इस संसार से चले जाना, और दूसरी जेनेरेशन को इस भूमि का चार्ज देना। यह क्रम आदि से चला आ रहा है और अनन्त तक चलता रहेगा।

मानव एक ईश्वर निर्मित यानी अल्लाह का बनाया हुआ ऐसा खास प्राणी है जिस को इस धरती का इन्चार्ज बनाया गया।

लगी बंधी मुद्दत के लिये आता है और इस संसार से चला जाता है।

मैं इस मौके पर अपने देश वासियों को और जो इस घटना से पीड़ित हुये उनके परिवार के लोगों को, सांत्वना देते हुए यह अर्ज करता हूं कि भूल कहां हो रही है यह तलाश किया जाये। इस साइन्स और टेक्नोलोजी के जमाने में इन्सान के लिये सोचने की कितनी बातें हैं। जिसकी तरफ हमारा ध्यान नहीं है। हम सिर्फ अपनी मौज में मस्ती खेलकूद, क्रिकेट के खेलों में करोड़ों, अरबों रूपिया लगाते हैं। बहुत सी चीजों में अपव्यय करते हैं यानी फुजूल खर्ची में लगाते हैं।

हुकूमत भी यही काम करती है। बहुत शोबाजी करते हैं। मै आपसे यह कहना चाहूंगा कि यह धरती किसी की बनाई हुई है हम उसके ट्रस्टी हैं। ट्रस्टियों को ऐसा नहीं करना चाहिए। हमारे यहां ऐसे भी हैं जिनको रहने के लिए मकान नहीं पहनने के लिए कपड़ा नहीं। क्या मानवता के इस हिस्से के लिये हमारे पास कुछ नहीं है। हम क्या कर रहे है?

ऊपर वाला जैसा कि उसने अपनी किताब में फरमाया

भाषांतर– क्या इन्होंने गौर नहीं किया और देखा नहीं कि हर साल इनको एक बार या दो बार आफत में डाल कर उनकी जाँच पड़ताल होती है,' फिर भी तौबा करके संभल नहीं जाते, और नसीहत कुबुल नहीं करते।

सूर–ए–तौबः आयत १२६

इन्सान सोचता नहीं कि मैं उसको साल में एक दो बार पनिश्मेन्ट देता रहता हूं, उसको सूई चुभाता रहता हूं। ताकि वह संभल जाये। लेकिन सही बात की तरफ उसका ध्यान भी नहीं जाता और नसीहत को सुनने के लिये भी तैयार नहीं है।

मेरे भाइयों! इस मौके पर मैं यह कहना चाहूगा कि हम सब अपने ईश्वर की तरफ अल्लाह की तरफे GOD की तरफ अपने निर्माता की तरफ, अपने पालनहार की तरफ, इस दृष्टि के सृजन हार की तरफ पलटें।

सोचने की बात है कि हम इस जीवन में क्या कर रहे हैं क्या लेकर जा रहे हैं। जो हमारे काम आये और हमारे मरने के बाद भी, जैसा कि आकाशी पुस्तक में बताया गया।

भाषांतर– और आगे आने वाले लोगों की जबानों पर भी मेरी दावत का चर्चा सच्चाई की बुनियाद पर जारी रखिये।

कि मैं तो मर जाऊंगा लेकिन मेरे दुनिया छोड़ने से पहले कुछ काम ऐसे करा लीजिये मुझ से जिससे मेरे बाद लोग उस से लाभ उठा सकें।

मै आपसे यह कहना चाहूंगा कि धार्मिक स्थलों पर हद से ज़ियादा खर्च करना, वस्तुओं को नष्ट करना, और मानव मात्र के लिये ज़ियादा ध्यान न देना, यह एक ऐसी भूल है जिससे हमको बचने की पूरी कोशिश करना चाहिये। हम पर हमारे माता पिता का हक है हमपर हमारे पुत्र पुत्रियों के हक है हमपर, परिवार के हक हैं।

लेकिन उस गरीब मानव वर्ग के भी हम पर हक हैं कि हम उसकी उदरपूर्ति के लिये उस की आजीविका पार्जन के लिये हम कुछ कर सेके ऐसी परिपाटि हमको डालनी चाहिये।

हम सब का पालन हार एक ही है। निर्माता एक ही है। इन्सानी ज़बानों में हजारों नाम हैं। अल्लाह है, ईश्वर है, निर्माता है, पालन हार है, अन्नदाता है। जीवन दान देने वाला है। लौटकर भाईयों उसी की तरफ जाना है।

यह हर्गिज़ न समझा जाये कि समन्दर के एक हिस्से में यह हादिसा हुआ। अब तक कहा जाता है ६० हजार इन्सान पानी के चपेट में आ गये जिन्हें दुनिया छोड़नी पड़ी।

इस बात को लिख लीजिये कि हम यहां भेजे गये है यहां थे नहीं, यहां रहेंगे नहीं यहां से चले जायेंगे।

हम कुछ अच्छे काम मानव मात्र के अपने साथ ले जायें तो मृत्यु के पश्चात भी हमारा जीवन सफल होगा।

धर्म के नाम पर झगड़े भी मुनासिब नहीं है। जब एक प्रभु ने सब को बनाया है नाम उसके हजारों हो सकते है। आस्मानी संदेश ने यह कहा कि:

भाषांतर– और अल्लाह के नाम सब अच्छे अच्छे है, उन्हीं के नामों से उसे पुकारो, और उन लोगों का रास्ता छोड़ दो जो उसके नामों में झगड़ा डालते हैं, (अअ़राफ, आयत १८०)

उसके एक से एक नाम है, अन गिनत नाम हैं। सारे समन्दरों की सियाही बनाके लिखना शुरू करे तो उसकी महिमा समाप्त नहीं होगी, समन्दरों की सियाही खत्म हो जायेगी।

जो भी काम हो वह मानव मात्र के लिये उपयोगी हो। और जो पाप अन्दर अन्दर से उबल रहे हैं, उसकी तरफ भी ध्यान दीजिये, पीछे पलटकर देखिये कि जीवन के पिछले हिस्सों में हम से वह कौन से पाप हुए हैं जिससे सृष्टि का निर्माता हम से नाराज है।

अभी उसने सिर्फ एक 'पोस्ट कार्ड' के जैसा पानी का एक झकोला दिया है तो हमारा यह हाल है। क्या हाल बनेगा उस वक्त जब समन्दरों में आग लग जायेगी, आसमान टूट कर गिरेंगे, चांद और सितारे, सूरज सब झड़ पड़ेंगे। और मानव को हिसाब के दिन अपने प्रभु के सामने खड़ा होना है। और हमारा हिसाब होना है यह बात हमें याद रहें तो हम पाप और अन्याय से बच सकते हैं। और जो प्राकृतिक आपदायें हैं उनसे बचने की कोशिश कर सकते हैं।

●●●

औ़रत और समाज

डा० मुहम्मद सऊद आलम कासिमी

औरत छुपाने की चीज है। जब वह बाहर निकलती है शैतान उसको घूरता है और जब वह अपने घर में होती है तो अल्लाह की रहमत से करीब होती है।

(तिर्मिजी)

औरत का खाना, कपड़ा और रिहाइश का नज़्म मर्दों के ज़िम्मे है। इसलिये उसे रोजी की तलाश में भटकने की जरूरत नहीं है और अगर उस का कोई जिम्मेदार न हो तो अपनी जिन्दगी की जरूरतें पूरी करने के लिये बाहर जा सकती है। लेकिन जरूरत के लिये बाहर निकलने और फैशन दिखाने के लिये निकलने में बड़ा फर्क है। एक जगह जरूरत पूरी करना है तो दूसरी जगह नफ़्स की हवस पूरी करना है। एक जगह अपनी जरूरत पूरी करने की जिम्मेदीरी की कोशिश है दूसरी जगह अपनी इज्ज़त व आबरू बचाने की जिम्मेदारी से भागना है। इसी तरह घर के जिम्मेदारों और महरमों के साथ निकलने और ना महरम दोस्तों के साथ निकलने में भी बड़ा फर्क है। इस्लाम ने तो जरूरत के वक्त औरतों को फौजी खिदमत से भी नहीं रोका है। मगर औरतों पर दिफाअ (डिफेन्स) की और जंगी (युद्ध सम्बन्धी) कामों की जिम्मेदारी नहीं डाली, यह जिम्मेदारी तो मर्दों को सौंपी है। मर्दों को अगर अपने घर की तरफ से इतमीनान हासिल हो जाए तो वह दिफाअी खिदमात जियादा अच्छे तौर पर अंजाम दे सकते हैं। हज़रत अनस से रिवायत है कि औरतों ने एक मर्तबा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अर्ज किया कि सारी फजीलात (श्रेष्ठता) मर्दों को हासिल है मर्द जिहाद करते हैं और बड़े बड़े काम अंजाम देते है हम को भी मौकअ़ (अवसर) दीजिये कि हमें मुजाहिदीन के बराबर अज्र मिल सके तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया तुम को घर बैठे मुजाहिदीन के बराबर सवाब मिलेगा। वह समाज जो घर का सुकून (शान्ति) और खानदान का वकार (प्रतिष्ठा) प्रदान करता हो और उनको घर बैठे फौजी खिदमत अंजाम देने वाले लोगों के बराबर अज्र व इहतिराम (सम्मान) का हकदार समझता हो उसकी अजमत (महान्ता) को वह समाज कहां पा सकता है जो औरतों को घरों से निकाल कर मैदान में लाता हो, और उसके हुस्न (सुन्दरता) की नुमाइश (प्रदर्शन) करता हो और उसे सेक्स मैटेरियल के तौर पर इस्तिअमाल करता हो।

पहली किस्त

सीरतुन्नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

लेखक: अल्लामा शिबली नोमानी रह०
अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह०

(समय की मांग और पाठकों की अभिरूचि 'APTITUDE' को ध्यान में रखते हुए "सच्चा राही" महान रचना सीरतुन्नबी सल्ल० के उन अंशों को, जो हमारे पाठकों के लिए उन के दैनिक जीवन में उपयोगी और लाभदायक है और जो समाज–सुधार, सही सोच, रचनात्मक चिन्तन, मानव–समाज में मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना और समाज को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम व सहायक हैं, किस्तवार प्रस्तुत करने का, गौरव प्राप्त कर रहा है, यह खुशी और सआदत की बात है। यह प्रस्तुति किस्तवार होगी, इसलिए पाठकों से अनुरोध है कि वे इस क्रम को अटूट बनाये रखने के लिए पत्रिका के अगले अंकों का सिलसिला जारी रखें।

हमारा प्रयास अनुवाद में यथा सम्भव लेखक की मुल भाषा और शैली को बनाये रखने का होगा। कोष्ठक में दीगई बातें अनुवादक के ख़ताकार क़लम से होंगी। किताब जो सात खण्डों में कुल २२८२ पृष्ठ की है, के चयनित अंशों को, विशेषकर खण्ड दो और छः व सात से चयनित अंश जिनका सम्बन्ध अख़लाके नबवी सल्ल० और अखलाकी तालीमात की तफसील व तशरीह तथा मामलात से है, किस्तवार प्रस्तुत करने की योजना है।

अल्लाह तआला हमारे इस प्रयास को सफल और सार्थक बनाये कि सब कुछ उसकी तौफ़ीक और मदद पर निर्भर है।

कुछ किताब के बारे में

किताब "सीरतुन्नबी" सल्ल० एक महान ग्रन्थ है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवनी) पर इससे अधिक विस्तृत (Voluminous) ग्रन्थ उर्दू में, अनुवादक की नजर से नहीं गुज़रा। यह किताब सात हिस्सों में है, शुरू में किताब के पांच हिस्से थे जो बाद में सात हिस्सों में बांट दिये गये, और इन सात हिस्सों में विषय–वस्तु (MATTER) की तरतीब भी बदल गई।

इस किताब के लेखक अल्लामा शिबली नोमानी रह० और अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह० हैं। अल्लामा शिबली नोमानी एक महान विद्वान, विचारक, शोधकर्ता और लेखक गुजरे है। सन् १३२३ हिज्री में "अल–फ़ारूक" जो उनकी विश्वविख्यात रचना है और जिस में ख़लीफ़ा दोयम हज़रत उमर फारूक रजि० की सीरत का विस्तृत उल्लेख है, लिखने के बाद अल्लामा शिबली नोमानी ने "सीरतुन्नबी" सल्ल० लिखना शुरू की और सन् १३३० में पहला हिस्सा लगभग पूरा कर लिया। अल्लामा शिबली नोमानी की मृत्यु सत्तावन (५७) साल की उम्र में सन् १९१४ ईस्वी में हुई मृत्यु के समय वह किताब के तीन हिस्से और चौथे हिस्से के पचीस–तीस पृष्ठ ही लिख पाये थे। उन के बाद उनके इस काम को उनके लायक शागिर्द (शिष्य) और महान विद्वान सैयद सुलैमान नदवी ने पूरा किया। सैयद साहब के कलम से सातवे हिस्से के लिए जो मजामीन निकले उन्हें सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान साहब, नाजिम, दारूल मुसन्निफीन, आजमगढ़ ने यक जा कर के एक मजमूआ त्रैयार किया, यही किताब की सातवीं जिल्द है। सैयद सुलैमान नदवी का इरादा मामलात और सियासियात पर भी एक ज़खीम जिल्द लिखने का था, अगर ऐसा हो जाता तो यह किताब सीरत व तालीमाते नबवी पर एक इन्साइक्लोपीडिया (विश्व–कोष) का दर्जा हासिल कर लेती लेकिन अफसोस है कि वह इसे पूरा न कर पाये थे कि उनकी मृत्यु हो गयी।" किताब की सातवीं जिल्द मात्र ११० पृष्ठ की है।

सैयद सुलैमान नदवी रह० का इस काम में उनके जिन लायक़ शागिर्दों ने और साथियों ने हाथ बटाया उन में मौलाना मुहम्मद उवैस साहब नगरामी नदवी, मौलाना हमीदुद्दीन साहब फ़राही, मौलाना अब्दुस्सलाम साहब नदवी और प्रोफेसर अब्दुल बारी साहब नदवी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन हजरात ने मुसव्वदः(SCRIPT) को यकजा करने, साफ करने (FAIR) और सन्दर्भों व उद्धरणों (REFERENCES AND EXTRACTS) का कुर्आन व हदीस से मिलान करने का काम किया।

अल्लाम शिब्ली नोमानी का मुसव्वदा उन के जीवन–काल में साफ किया जा चुका था।

इस प्रकार यह महान ग्रन्थ दो महान विद्वानों की चालीस साल की कड़ी मेहनत और अंथक परिश्रम का नतीजा है, इसका लेखनकाल सन् १३२३ से १३६४ हिज्री है। किताब के प्रकाशन के लिए सन् १३३० हिज्री में जब शिबली नोमानी ने अपील पेश की जिस में पचास हजार रूपये का खर्च था, तो सैकड़ों मुसलमान इस खिदमत के लिए आगे बढ़े इन में उम्मत के फुक़रा भी थे और मिल्लत के उमरा भी। लेकिन यह नेक काम भोपाल की शासक नवाब सुल्तान जहाँ बेगम ताजुलहिन्द के लिए मुकद्दर था इसलिए वह सब के आगे बढ़ीं।

एक ज़माने में इस महान रचना को भारतीय उपमहाद्वीप में जो लोकप्रियता मिली, वह सीरत की किसी अन्य पुस्तक को प्राप्त नहीं हो सकी। यह एक ऐसा सारग्रमित और विस्तारपूर्ण (EXHAUSTIVE AND COMPREHENSIVE) ग्रन्थ है कि इसके बाद हर आने वाला उनके शोध और खोज से लाभान्वित होने पर विवश दिखाई पड़ता है। किताब के प्रत्येक भाग का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है:–

भाग एक: लेखक अल्लामा शिबली नोमानी की मृत्यु के बाद सन् १३३६ हि० में प्रकाशित हुआ । इस हिस्से में नुबूवत के संघर्षपूर्ण काल का वर्णन है।

भाग दो: लेखक अल्लामा शिबली नोमानी। सन् १३३८ हिज्री में प्रकाशित। इस भाग में नुबूवत के तीन साला अमन की जिन्दगी का वर्णन है।

भाग तीन: लेखक अल्लामा शिबली नोमानी। सन् १३४३ हिज्री में प्रकाशित हुआ। इस भाग में नबी के मोजिज़ात (चमत्कार) और नबी की खुसूसियतों का बयान है।

भाग चार: लेखक सैयद सुलैमान नदवी। सन् १३५१ हिज्री में प्रकाशित। इस भाग में नुबूवत के मन्सब का बयान है।

भाग पांच: लेखक सैयद सुलैमान नदवी। सन् १३५४ हिज्री में प्रकाशित। इस भाग में इबादत का बयान है।

भाग छः : लेखक सैयद सुलैमान नदवी। सन् १३५७ हिज्री में प्रकाशित। इस भाग में उन अख़लाकी तालीमात की तफ्सील व तशरीह (विवेचना) है जो रसूल सल्ल० के जरिये से मुसलमानों को बताई और सिखाई गई है।

भाग सात: लेखक सैयद सुलैमान नदवी। सन् १४०० हिज्री में प्रकाशित। इस भाग में मामलात का बयान है। अब हम आप की खिदमत में सीरतुन्नबी भाग २ पृष्ठ १७२ से अनुवाद प्रस्तुत करे रहे हैं:

"ऐ मुहम्मद ! तुम अख़लाक़ के बड़े दर्जे पर हो।" कुर्आन

हज़रत रिसालत पनाह सल्ल० की पाक ज़िन्दगी का यह वह हिस्सा है जहाँ आकर आप की जिन्दगी तमाम नबियों और दुनिया के सुधारकों (रिफार्मर्स) से साफ़ मुमताज़ नजर आती है। तारीख़ी हस्ती का सबूत एक तरफ़, अगर यह सवाल किया जाये कि इन अख़लाकी वाज़ (प्रवचनों) का ख़ुद अमली नमूना क्या था तो दुनिया इसके जवाब से आजिज़ रह जायेगी। (आम तौर में समझा जाता है कि) दुनिया के तमाम रिफ़ार्मर्स और अख़लाक के सुध ाराकों में गौतम बुद्ध और मसीह अ० का दर्जा सबसे बड़ा है। लेकिन क्या कोई बता सकता है कि हिन्दुस्तान का यह महान सुधारक अमलन (व्यवहार में) क्या था? ज़ैतून पर्वत के रहीमाना अख़लाक (उदार आचरण) का वाइज़

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

(मसीह) दुनिया को अख़लाक का बेहतरीन दर्स (पाठ) देता था, लेकिन उसकी जिन्दगी की एक घटना भी उस के सुनहरे कथनों के समर्थन में तुम को मालूम है (यानी इंजिल में महफूज़ नहीं है) लेकिन मक्का का मुआल्लिमे उम्मी (अध्यापक जो लिखा पढ़ा न हो) पुकार कर कहता था:– "जो नहीं करते वह कहते क्यों हो।"(कुरान–सूरः बकरः)

वह खुद अपनी तालीम का आप नमूना था। इन्सानों के आम मज्मा में वह जो कुछ कहता था घर पर वह उसी तरह नज़र आता था। अख़लाक व अमल का जो नुकतः वह दूसरों को सिखाता था वह खुद उस पर अमल करता था। बीवी से बढ़कर इन्सान के अख़लाक का और कौन राज़दार हो सकता है। चन्द साहिबों ने आकर हज़रत आयशा रजि० से दरख्वास्त की कि हज़रत सल्ल० के अख़लाक बयान कीजिये, उन्होंने पूछा क्या तुम कुरान नहीं पढ़ते? आप सल्ल० का अख़लाक कुर्आन में मौजूद है। मौजूदा आसमानी सहीफे किताबें अपने दाइयों (बुलाने वाले) के बेहतरीन अक़वाल (कथन) का मजमूआ (संकलन) है लेकिन क्या उनका एक हर्फ़ भी अपने मुबल्लिग़ीन (प्रचारक) के अमल का मुद्दई है। कुरान लाखों मुख़ालिफीन की भीड़ में अपने दायी–ए–हक़ की निस्बत गोया है:– ऐ मुहम्मद ! तुम अखलाक के बड़े दर्जे पर हो"। (कुरान)

बेदर्द नुकताचीं (आलोचक) तेरह सौ वर्ष (वर्तमान में चौदह सौ वर्ष) बाद आप सल्ल० को संगदिल (कठोर हृदय वाला) कहते हैं, लेकिन उस वक्त जब यह सब कुछ हो रहा था, कुरान खुद दुश्मनों के मज्मा में आप सल्ल० की निस्बत क्या गवाही दे रहा था। "खुदा की इनायत से तुम उन से नर्मी से पेश आते हो, अगर तुम कहीं कज खुल्क (टेढ़े आचरण वाले) और सख़्त दिल होते तो यह लोग तुम्हारे आस पास से हट जाते।" (आले इमरान)

दूसरी जगह कहता है:–

"तुम्हारे पास तुम में से खुद एक पैगम्बर आया, उस पर तुम्हारी तकलीफ़ बहुत शाक गुजरती (अखरती) है, तुम्हारी भलाई का वह भूखा है, ईमान वालों पर बड़ा गर्म और मेहरबान है।" (सूरः तौबः)

अख़लाक के मसअले की निस्बत एक बड़ी गल्ती यह की गई है कि सिर्फ रहम और तवाजो़ व खाक सारी (विनम्रता) को पैग़म्बराना अख़लाक का मज़हर (दर्पन) क़रार दे दिया गया। हालांकि अखलाक वहचीज है जो जिन्दगी की हर तह में और घटनाओं के हर पहलू में साफ दिखाई पड़ती है। दोस्त व दुश्मन, अपना–पराया, छोटा–बड़ा, गरीब–अमीर, सुलह व जंग, अकेले–दुकेले, गर्ज़ हर जगह और हर एक तक अख़लाक का दायरा फैला है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़लाक के उनवान पर इसी हैसियत से नज़र डालनी चाहिए।

अख़लाके नबवी सल्ल० का जामे बयान (व्यापक वर्णन):

इससे पहले कि हुजूर अनवर सल्ल० के मुबारक अख़लाक के आंशिक और तफसीली वाक्यात लिखे जायें उन साहिबों के बयानात लिखे जाते हैं जिन्हों ने आप सल्ल० की खिदमत में सालहा साल बसर की हैं और जो आप के अख़लाक व आदात के दफ्तर के एक एक हर्फ़ से वाकिफ थे। इन्सान के हालात का वाकिफ़कार बीवी से बढ़कर दुनिया में कौन हो सकता है। हज़रत ख़दीजा (रजि०) जो नबूवत से पहले और नबूवत के बाद पचीस वर्ष तक आप सल्ल० की ख़िदमते ज़ौजियत (पतिव्रता) में रही थीं, वहीं की शुरूआत के ज़माने में आप को इन शब्दों में तसल्ली देती थी, "हरगिज नहीं ! खुदा की कसम ! खुदा आप को कभी गमगीन न करेगा, आप सिल–ए–रहम करते हैं, कर्जदारों का भार उठाते हैं, गरीबों की मदद करते हैं, मेहमानों की ज़ियाफ़त (मेहमानदारी) करते हैं, हक़ की हिमायत करते हैं, मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं।"

उम्महातुलमोमनीन में हज़रत आयशा रजि० से बढ़कर किसी ने आप के अवसाफ़ (गुण) तफ़सील से नहीं बयान किये हैं, फरमाती हैं, आँहज़रत सल्ल० की आदत किसी को बुरा भला कहने की न थी, बुराई के बदले में बुराई नहीं करते थे बल्कि दर गुजर करते थे और माफ़ फरमा देते थे। आप को जब दो बातों में अख्तियार दिया जाता तो उनमें जो आसान होता, उसको अख्तियार फरमाते बशर्ते कि वह गुनाह न हो, वर्ना आप उस से बहुत दूर होते। आप ने कभी किसी से अपनी जाती मामले में बदला नहीं लिया, लेकिन जो अल्लाह के हक्म की खिलाफ़ वर्जी करता, खुदा उस से बदला लेता था यानी खुदा की तरफ से अल्लाह के हुक्म के अनुसार आप उस पर हद जारी फरनाते थे। आप ने नाम लेकर कभी किसी मुसलमान पर लानत नहीं की। आप ने कभी किसी गुलाम को, लौंडी को, किसी औरत को, जानवर

को अपने हाथ से नहीं मारा। आप ने किसी की कोई दरख्वास्त रद्द नहीं फरमाई लेकिन यह कि वह नाजायज हो। आप जब घर के अन्दर तशरीफ लाते तो बहुत खन्दाँ हँसते और मुस्कराते हुए। दोस्तों में पाँव फैलाकर नहीं बैठते थे। बातें ठहर–ठहर कर इस तरह फरमाते थे कि कोई याद रखना चाहे तो रख ले।

आप हज़रत अली रजि०, जो आप सल्ल० के तर्बियत याफ़्ता (प्रशिक्षित) थे और नबूवत की शुरूआत से आखिर तक कम से कम तेईस वर्ष आप की ख़िदमते अक्दस (सेवा) में रहे थे, एक दफ़ा हज़रत इमाम हुसैन रजि० ने उन से आप के अख़लाक व आदात की निस्बत सवाल किया। फरमाया आप सल्ल० खन्दाँ जबीन (ललाट), नर्म आदत वाले, मेहरबान तबा (उदार प्रवृत्ति) थे। सख्त मिज़ाज और तंगदिल न थे। बात बात पर शोर नहीं करते थे, कोई बुरी बात मुंह से कभी नहीं निकालते थे ऐब ढूंढने वाले न थे, तंग गीर (डानुदार) न थे। कोई ऐसी बात होती जो आप को नापसन्द होती तो उसकी उनदेखी करते। कोई आप से इसकी उम्मीद करता तो न उसको निराश करते थे और न मंजूरी जाहिर फरमाते थे अर्थात खुलकर इनकार व तर्दीद (काट) नहीं करते थे बल्कि खामोश रहते थे और मिज़ाज शनास (पहचानने वाले) आप के तेवर से आप का मकसद समझ जाते थे। अपने नफ्स (अस्तित्व) से तीन चीजें आप ने बिल्कुल दूर कर दी थीं, बहस व मुबाहसा, जरूरत से जियादा बात करना, और जो बात मतलब की न हो उस में पड़ना। दूसरों के बारे में भी तीन बातों से परहेज करते थे, किसी को बुरा नहीं कहते थे, किसी की ऐबगीरी नहीं करते थे, किसी के अन्दुरूनी हालात की टोह में नहीं रहते थे। वहीं बातें करतें थे जिन से कोई मुफीद नतीजा निकल सकता था। जब आप बात करते सहाबः इस तरह खामोश होकर और सरझुका कर सुनते गोया उनके सरों पर परिन्दे बैठे हैं, जब आप चुप हो जाते तो फिर वह आपस में बात चीत करते। कोई दूसरा बात करता तो जब तक वह बात खत्म न कर लेता चुप सुना करते। लोग जिन बातों पर हंसते आप भी मुस्करा देते। जिन पर लोग तअज्जुब करते आप भी करते। कोई बाहर का आदमी बेबाकी से बात करता तो आप धैर्य (तहम्मुल) रखते। दूसरों के मुंह से अपनी तारीफ़ सुनना पसन्द नहीं करते थे। लेकिन कोई अगर आप के एहसान व इनाम का शुक्रिया अदा करता तो कुबूल फरमाते। जब तक बोलने वाला खुद चुप न हो जाता आप सल्ल० उसकी बात दरमियान से नहीं काटते थे। बड़े फैय्याज (उदार) बड़े रास्तगो (सत्यवादी) बड़े नर्म मिजाज़ और बड़े खुश सुहबत (सत्संग) थे। अगर कोई अचानक आप को देखता तो मरऊब (रोब में आया हुआ) हो जाता लेकिन जैसे जैसे आशना (परिचित) होता जाता आप से मुहब्बत करने लगता।

हिन्द बिन अबी हाला जो गोया आप सल्ल० के आगोश परवरदः थे वह बयान करते है कि आप नर्म मिजाज थे, सख्त मिजाज न थे, किसी की तौहीन रवा न रखते थे (सहन न करते थे) छोटी छोटी बातों पर शुक्र अदा करते थे। किसी चीज को बुरा नहीं कहते थे। खाना जिस किस्म का सामने आता खा लेते और उसको बुरा भला न कहते। कोई अगर किसी सही बात को मुखालिफत करता तो आप को गुस्सा आ जाता और उसकी पूरा हिमायत करते, लेकिन खुद अपने जाती मामले पर कभी आप सल्ल० को गुस्सा नहीं आया और न किसी से (बदल लिया)। (जारी)

प्रस्तुति तथा रूपान्तर : मो० हसन अन्सारी

तुज्के बाबरी से

अक्टूबर स० १५२६ (९३३ हि०) के मुहर्रम के महीने में जो इस साल का पहला महीना है मेरे यहां एक और बच्चा हुआ जिस का नाम मैं ने फारूक रखा यूं तो हुमायूं को जिस काम के लिए भेजा था वह उसमें कामयाब हुआ लेकिन अभी बयाना किला फतह नहीं हुआ था इस लिए उस्ताद अली कुली को हुक्म दिया कि एक बड़ी तोप तैयार करे अली कुली ने मेरे हुक्म की तामील कर के तोप ढाली मगर कुछ खामी रह गई मगर ठण्डा होने पर पता चला कि तोप की नाली, दहाना और गोला भरने की जगह ठीक ठीक बनी है और कारआमद है मैंने उसे इनआम दिया।

दूसरी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़माना

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

आप का जन्म और प्रारम्भ के हालातः–

यह मालूम हो चुका है कि दुन्या कैसी बुराईयों में लिप्त थी और कैसी मुसीबतों में घिरी हुई थी और इसकी दशा किस क़दर खराब हो चुकी थी। अल्लाह मियां तो अपने बन्दों पर बड़े मेहरबान हैं। यह दशा देखकर उन्हें दया आई और उसे फिर से ठीक करने के लिए हमारे रसूल हज़रत मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दुन्या में भेजा। रबीउलअव्वल (बारहवफ़ात) की ९ तारीख थी जब हुजूर (सल्ल०) इस संसार में तशरीफ लाए। पैदा होने से पहले ही आप के पिता अब्दुल्लाह का देहान्त हो चुका था। छः वर्ष के न होने पाए थे कि माता हजरत आमीना का भी देहान्त हो गया और आप अपने दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के साथ रहने लगे। नौ वर्ष की उम्र में दादा भी इस दुन्या से सिधार गये और आप के चचा हजरत अबूतालिब आप का पालन पोषण करने लगे।

बचपन से ही आप बुरे कामों को नापसन्द फ़रमाते थे और हमेशा नेक कामों में लगे रहते थे। अभी पूरे तौर से जवान भी न होने पाए थे कि अरब में एक संस्था (अंजुमन) बनाई गई जिसका उद्देश्य था कि लूटमार, चोरी, डकैती और इसी प्रकार के बुरेकाम मिटाए जाएं। आप सल्ल० इस प्रकार के कामों को दिल से चाहते थे। तुरन्त इस संस्था में शामिल हो गये।

प्रारम्भ से ही आप की नेकी, सच्चाई, दीनदारी और अमानत इतनी मशहूर थी कि सब आप सल्ल० को अमीन (अमानतदार) कहकर पुकारते थे। दुश्मन तक आप को सच्चा और नेक समझते थे।

एक बार मक्का में इतनी अधिक वर्षा हुई कि काबा की दीवार फट गई कुरैश (अर्थात मक्का के लोगों) ने फिर से उसे ठीक करना शुरू किया। जब दीवारें कुछ ऊंची हो गईं और हजरे अस्वद (वह पवित्र काला पत्थर जिसे लोग हज में चूमते हैं) के लगाने का समय आया तो आपस में झगड़ा शुरू हो हुआ। हर आदमी चाहता था कि यह पत्थर उसी के हाथ से लगाया जाए। जब बात बढ़ी और मारपीट तक नौबत आई तो सबने कहा कि इस समय झगड़ा बेकार है कल जो व्यक्ति सबसे पहले आए वह इस झगड़े को तय करदे जो वह कहेगा हम सब वही करेंगे। सुबह हुई और लोग आए तो देखा कि हुजूर (सल्ल०) पहले ही मौजूद हैं। देखते ही चिल्ला उठे कि अमीन आ गए अब उन से बढ़कर और कौन हो सकता है। हज़रत (सल्ल०) ने एक चादर बिछाई, हजरे अस्वद उस पर रखा और फ़रमाया कि हर खानदान का एक एक आदमी आ जाए और सब मिलजुलकर चादर पकड़ लें इस प्रकार उठाकर पत्थर को उस की जगह तक लाएं। यहां पहुंच कर आपने फ़रमाया, अब मैं तुम सब की तरफ़ से इसे लगा देता हूं। इस तर्कीब से लोग बहुत प्रसन्न हुए और सारा झगड़ा समाप्त हो गया।

अल्लाह का संदेश

आप (सल्ल०) हमेशा नेक कामों मे लगे रहते थे, मक्का के निकट एक ग़ार (गुफा) था आप खाने पीने का सामान लेकर वहां चले जाते और कई–कई दिन तक इबादत (उपासना) करते रहते। एक दिन आप इसी हालत में थे कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह का संदेश लेकर आए। उस दिन से कुर्आन की आयतें उतरना शुरू हुईं। कुछ दिन के बाद आदेश आया कि दूसरों को भी अल्लाह की बातें सुनाई जाएं। जो लोग आप के अधिक निकट थे पहले आप ने उन को सुनाया। हज़रत खदीजा (रजि०) आप की बीवी थीं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रजि०) आप के उम्र भर के दोस्त थे, हजरत अली (रजि०) बचपन से साथ रहे थे, हज़रत ज़ैद (रजि०) आप के गुलाम थे आप (सल्ल०) की पूरी जिन्दगी उन लोगों के सामने थी। यह अच्छी तरह जानते थे कि आप किस कदर नेक, सच्चे, पाक और ईमानदार हैं। आपने जैसे ही उन से फ़रमाया उन्होंने मान लिया और आप (सल्ल०) पर ईमान ले आए।

शुरू में कुछ दिन आप (सल्ल०) चुपचाप खामोशी से काम करते रहे। अलग अलग लोगों से मिलते और उन्हें खुदा का पैग़ाम पहुंचाते। कुछ लोग

इसी तरह ईमान लाए तो अल्लाह का आदेश आया अब खुलकर साफ़ साफ़ लोगों से कहो। आप ने सफ़ा पर्वत पर तमाम लोगों को इकट्ठा किया। जब सब इकट्ठे हो गये तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर मैं कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक बहुत बड़ी सेना पड़ी हुई है, जो शीघ्र तुम पर हमला करने वाली है, तो क्या तुम विश्वास करोगे। लोगों ने कहा क्यों नहीं। चालीस वर्ष से अधिक आप (सल्ल०) हमारे साथ रहे हैं, इतने दिनों में कभी आप (सल्ल०) की ज़बान से एक शब्द गलत नहीं निकला फिर भला क्या कारण है कि आप (सल्ल०) का कहना न मानें। यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अच्छा सुनो अल्लाह एक है, उसने मुझे रसूल (सन्देष्टा) बनाकर भेजा है। यह सुनना था कि सबके सब बुरा भला कहने लगे। कहां तो अभी प्रशंसा कर रहे थे, और कहां ज़रा सी देर में बुराई शुरू कर दी।

अब आप (सल्ल०) पूरे तौर से लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने लगे और धीरे धीरे इस्लाम फैलने लगा। कुरैश को यह बहुत नागवार था। वह किसी तरह न चाहते थे कि लोग इस्लाम कुबूल करें। इसलिये कि एक तरफ उनका धर्म मिटा जाता था, दूसरी तरफ उनकी सरदारी और रियासत जिसके वह सदियों से आदी चले आ रहे थे, समाप्त होती जाती थी। इसलिये पहले तो उन्होंने ज़बानी विरोध किया परन्तु जब देखा कि इस तरह काम नहीं चलता तो रसूलुल्लाह–सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तरह तरह से तकलीफें पहुंचानी शुरू कीं। कभी रास्ते में कांटे बिछा देते ताकि आप के पैरों में चुभ जाएं, कभी आप पर गन्दगी डाल देते, कभी गला घूटंने की कोशिश करते तात्पर्य यह कि हर तरह आप (सल्ल०) को अपने काम से रोकना चाहते लेकिन आप (सल्ल०) पर तनिक भी असर नहीं हुआ और आप ने बराबर अपना काम जारी रखा। आखिर लोग हज़रत अबूतालिब के पास शिकायत लेकर आए कि आप इस से रोकें। हजरत अबूतालिब ने बुला कर समझाया लेकिन आप (सल्ल०) ने कहा कि खुदा की क़सम अगर मेरे दाहिने हाथ पर सूरज और बायें हाथ पर चांद रख दिया जाए और कहा जाए कि मैं इस काम से बाज़ आ जाऊँ तो कदापि यह नहीं हो सकता। कहते कहते आप (सल्ल०) की आंखो में आंसू आ गए। हज़रत अबूतालिब ने कहा जाओ अपना काम करो, जब तक मै जिन्दा हूं तुम्हे कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। अब कुरैश ने अधिक सख़्ती शुरू की और आप (सल्ल०) के साथ आप के साथियों और मुसलमानों को भी तरह तरह से सताने लगे और कष्ट पहुंचाने लगे। किसी को मारते, किसी को कांटे चुभोते, किसी को ज़मीन पर घसीटते, किसी को बान्ध कर लटकाते, किसी को घायल करके अरब की जलती हुई रेत पर लिटाते और ऊपर से पत्थर रख देते। गरज़ कि कोई ऐसा कष्ट नहीं था जो उन्होंने उठा रखा हो परन्तु अल्लाह के यह बन्दे ईमान के ऐसे पक्के थे कि उन पर किसी सख्ती का कोई असर न होता। जैसी जैसी सख़्ती बढ़ती जाती थी, वैसे वैसे उनका ईमान और मजबूत होता जाता।

जब कुरैश की सख्ती हद से बढ़ गई और गरीब मुसलमानों के लिए बर्दाश्त के बाहर हो गई तो आप (सल्ल०) ने अपने साथियों को आदेश दिया कि हबशा, जहां का बादशाह बड़ा ही दयालू था, चले जाएं। अतएव यह लोग हबशा रवाना हो गये। कुरैश भला इसे कैसे पसन्द कर सकते थे कि मुसलमान कहीं आराम की जिन्दगी बसर कर सकें। तुरंत हबशा कछ लोग जा पहुंचे और वहां के बादशाह नजाशी से मिले और कहा कि हमारे चन्द नालाएक़ गुलाम यहां भाग आए हैं। आप उन्हें वापस कर दीजिए। नजाशी ने मुसलमानों को बुलाकर हालात पूछे। हजरत जाफर (रजि०) ने सारी कहानी सुना दी। नजाशी को इत्मिनान हो गया और उस ने मुसलमानों से कहा कि आप लोग इत्मिनान से रहें। उसके बाद कुरैश के लोगों को वापिस कर दिया।

अब मक्का में जो लोग बाकी रह गये थे, उनके साथ और अधिक सख्ती होने लगी लेकिन एक आदमी भी दीन से न फिरा। यह देख कर कुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खान्दान के बाईकाट की सलाह की। अतः दो साल से अधिक उनका सख्त बाईकाट रहा और उन के साथ मेल जोल, शादी विवाह हर प्रकार के सम्बन्ध तोड़ लिए। उन पर खाने पीने का सामान बन्द कर दिया। दो ढाई वर्षों के बाद कुछ दयालू लोगों ने बीच में पड़ कर बाईकाट समाप्त कराया। (जारी)

(अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी)

अपने भाई को सलाम करने में पहल कीजिये कोई सलाम करे तो उस के सलाम का जवाब खुशी के साथ तुरन्त दीजिये।

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्नः दुरूद शरीफ़ पढ़ने का क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्आने मजीद में हैः बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते नबी यानी (मुहम्मद) पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालों तुम भी उन पर दुरूद भेजो और खूब खूब सलाम भेजो। (३३:५६) इस आयत में हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद पढ़ने का हुक्म है इसलिये आप पर दुरूद पढ़ना बहुत ज़रूरी है आप पर दुरूद न पढ़ने वाला फ़ासिक यानी सख्त गुनाहगार होगा। मगर आयत में यह नहीं बताया गया कि कितनी बार दुरूद व सलाम पढ़ना फ़र्ज़ है। उलमा ने जिन्दगी में एक बार दुरूद पढ़ना फ़र्ज़ बताया है अलबत्ता यह निज़ाम बना दिया गया कि पांच वक्त की नमाज़ फ़र्ज़ हुई इनके अलावा वित्र वाजिब, सन्नते मुअक्किदा हैं नवाफिल हैं सब में अत्तहीयात पढ़ना वाजिब है जिस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम पढ़ा जाता है और आप पर रहमत व बरकत की दुआ मांगी जाती है। हर आखिरी कअ़दे में दुरूद पढ़ना सुन्नते मुअक्किदा है। अगर नवाफ़िल न शुमार करें तब भी हर नमाजी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रोजाना १७ बार सलाम करता है और आप पर ११ बार दुरूद भेजता है। नवाफ़िल पढ़ने वाले के दुरूद व सलाम की तादाद और बढ़ जाती है। लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मत पर जो इहसानात हैं उनका बदला तो उम्मत नहीं दे सकती मगर चहिये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद की कसरत करे।

अहादीस में दुरूद की कसरत पर फ़ज़ाइल आए हैं। एक हदीस से मालूम हुआ कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि उस शख्स की नाक रगड़ी जाए जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सुने और दुरूद न पढ़े इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आमीन कही। लिहाज़ा उलमा ने यह और इसी तरह की दूसरी अहादीस से समझा है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी सुनने, पढ़ने, ज़बान से अदा करने, लिखने पर दुरूद पढ़ना वाजिब है।

प्रश्नः कुछ लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लिखते या छापते हैं तो उर्दू में उस पर स्वाद का शोशा बना देते हैं या सल्अम लिख देते हैं, हिन्दी में स० या सल्ल० बना देते है, इस का क्या हुक्म है?

उत्तरः जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लिखा जाएगा तो दुरूद पढ़ना वाजिब हो जाएगा, सिर्फ लिख देने से वाजिब अदा न होगा। लिखावट तो कौल की अलामत है, पस अगर कोई सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अलामत बनाता है और ज़बान से पढ़ भी लेता है तो नाजाइज न होना चाहिये लेकिन इस में बुख्ल मालूम होता है चुनांचि अक्सर उलमा ने किसी अलामत को पसन्द नहीं किया और पूरा दुरूद लिखने का इहतिमाम किया हदीस की कितनी किताबें हैं हर हदीस में कम से कम एक बार तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम आया ही है हर जगह पूरा पूरा दुरूद छापा गया है।

प्रश्नः अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम न आए, रसूल, नबी, हुजूर, आप, वगैरह कहें या लिखें क्या तब भी दुरूद वाजिब हो जाता है?

उत्तरः जिस लफ़्ज (शब्द) से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुराद हों उसके साथ दुरूद ज़बान से भी अदा करें और लिख रहे हों तो लिखें भीं।

प्रश्नः सब से अच्छा दुरूद कौन सा है? दुरूद लखी और दुरूद ताज का क्या हुक्म है?

उत्तर : सभी दुरूद अच्छे हैं, दुरूद लखी और दुरूद ताज हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या सहाब–ए–किराम (रजि०) के सिखाए हुए नहीं हैं। ऐसे दुरूदों में खतरा है कि कोई ऐसा कल्मा न आ जाए जो खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसन्द न हो और ऐसा न हो कि उस पर सवाब के बजाए अल्लाह तआला की जानिब से पकड़ हो जाए लिहाजा दुरूद वही पढ़ना चाहिये जो सहीह़ हदीस से साबित हो। मैं समझता हूं कि बहुत अच्छा दुरूद वह है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ में पढ़ने के लिए सिखाया है, उसे दुरूदे इब्राहीमी भी कहते हैं।

प्रश्नः हिन्दु लोग अपने देवताओं की स्तुत्य (हम्द) करते हैं और मुसीबत के वक्त उनकी स्तुत्य कर के उन से मदद चाहते हैं क्या दुरूद इसी तरह की चीज़ है?

उत्तर : हरगिज नहीं। दुरूद स्तुत्य जैसी चीज नहीं है। इस्लाम में किसी ग़ैरूल्लाह की स्तुत्य जाइज़ नहीं। इस्लाम के हर अमल में अहम उन्सुर (महत्वपूर्ण तत्व) तौहीद (एकेश्वर वाद) है। दुरूद एक दुआ है अल्लाह के रसूल से नहीं सीधे अल्लाह तआला से रसूल पर रहमत व सलामती उतारने की। हदीस शरीफ से साबित जिस दुरूद का तर्जुमा चाहे देख लें। गैर साबित शुदा दुरूद में यह खतरा भी है कि कहीं उस में रहमत व सलामती की दुआ के साथ अन्धी अ़कीदित में स्तुत्य न आ जाए जो अल्लाह के लिए खास है। आप ग़ौर करें अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नाम के साथ दुरूद, सहाब–ए–किराम के साथ रजियल्लाहु अन्हुम दूसरे बुजुर्गों के साथ रहमतुल्लाहि अलैहि, नबी, रसूल, सहाबी बुजुर्ग जिसका भी नाम लें अदब यह है कि फौरन अल्लाह तआला से उन के लिये रहमत मांगे उनसे मांगने की तालीम नहीं है। तौहीद (एकेश्वर वाद) का कितना इहतिमाम किया गया है फिर भी हम इस्लामी तालीमात को नजरअन्दाज करके शैतान के चक्कर में आकर शिर्क में मुबतला हो जाएं तो यह हमारी बदबख्ती ही तो है।

प्रश्नः दुरूद व सलाम के बारे में हम को कुछ नसीहतें लिखये।

उत्तरः दुरूद व सलाम पढ़ने के बेशुमार फाइदे हैं। सब से पहली बात तो यह कि यह अल्लाह तआला का हुक्म है, दूसरी बात यह कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत की अलामत है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमते उतारता है। दुरूद शरीफ़ मक्बूल दुआ है जिस दुआ से पहले और बाद में दुरूद पढ़ लें उस के कबूल होने की पूरी उम्मीद हो जाती है। दुरूद के फाइदो और फजाइल पर उलमा ने किताबें लिखी है जो उर्दू, हिन्दी में "फ़ज़ाइल दुरूद" के नाम से मिलती है उनका मुतालआ़ कर लेना चाहिये और हस्ब इस्तिताअ़त दुरूद व सलाम ज़ियादा से ज़ियादा पढ़ना चाहिये।

प्रश्नः क्या सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुरूद व सलाम है? और इस का विर्द किया जा सकता है?

उत्तरः बेशक इस जुम्ले में दुरूद भी है और सलाम भी लेकिन यह विर्द के लिये मुनासिब नहीं है यह तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सुनने या नाम लेने पर पढ़ा जाता है। इस में कहा जाता है उन पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो यानी जिन का नाम लिया गया है या सुना गया है। विर्द के लिये दुरूद वह मुनासिब है जिस का मतलब होः ऐ अल्लाह अपने रसूल मुहम्मद पर रहमत नाजिल फरमा और उन की आल पर और उन के असहाब पर और उन सब पर बरकत भी उतार और सलामती भी।

प्रश्नः क्या गैर अरबी ज़बान में हूजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजना दुरूस्त है और क्या उससे वाजिब अदा हो जाएगा?

उत्तरः गैर अरबी ज़बान में दुरूद व सलाम पढ़ना जाइज़ है और इससे वाजिब अदा हो जाएगा लेकिन उर्दू हिन्दी में रहमत और सलाम की जगह दूसरा लफ़्ज़ न लाएं, सलाम जिस माना में बोला जाता है उसका तर्जुमा (अनुवाद) तो मुम्किन ही नहीं है। बेहतर यह है कि दुरूद अरबी में पढ़ा जाए।

प्रश्नः कोई छोटा दुरूद विर्द के लिये लिखये जिसमें सलाम भी हो।

उत्तरः दुरूद शरीफ बहुत से हैं एक मुख्तसर दुरूद यह हैः अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदनिन्नबीयिल उम्मीयि व आलिही व अस्हाबिही व सल्लम(ऐ अल्लाह रहमत नाजिल फरमा नबीये उम्मी मुहम्मद पर और उन की आल पर और उन के अस्हाब पर और सलाम भी) अरबी अल्फ़ाज़ किसी अरबी जानने वाले से सहीह कर के पढ़ें। एक और छोटा दुरूद जो दो रिवायतों से माखूज है यूं हैः अल्लाहुम सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलिही–व–अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम– (ऐ अल्लाह रहमत नाजिल फरमा मुहम्मद पर और उनकी आल पर और उन के अस्हाब पर और सलामती भी।)

प्रश्नः एक मज्लिस में अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम बार बार आए तो क्या हर मरतबा दुरूद पढ़ना वाजिब है?

उत्तरः एक मज्लिस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम बार बार आए तो चाहिये कि हर मरतबा दुरूद पढ़ा जाए लेकिन वाजिब सिर्फ एक बार है, और बेहतर है कि मज्लिस दुरूद पढ़कर खत्म की जाए।

प्रश्नः क्या हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम लेने पर दुरूद पढ़ने के वाजिब होने में इख्तिलाफ़ भी है?

उत्तरः हां बाज उलमा ने सुन्नत या मुस्तहब माना है लेकिन इमाम तहावी

वगैरह वाजिब मानते हैं वही मौक़फ हम ने भी इख्तियार कर रखा है और इसी को ज़ियादा सहीह मानते हैं।

प्रश्नः एक बच्चे वाली औरत है। मैके वाले कहते है तलाक़ हो गई है मगर कोई गवाह नहीं है, वह लोग कहते है कि महर भी अदा नहीं हुई है। मैके वाले अपनी मजबूरी बताकर अपने घर रखने को तय्यार नहीं है, तीन बच्चों में एक लड़की १८ साल की शादी शुदा है, दूसरी लड़की १६ साल की है, लड़का १४ साल का है। ऐसे में औरत क्या करे?

उत्तरः ऐसे में औरत के भाई, बाप यानी मैके वाले शौहर से पूछें अगर वाकई उसने तलाक़ दी है तो औरत की जिम्मेदारी भाई बाप की है, रहने की जगह तो जैसे वह रहते है उस औरत के लिए निकालना ही होगी। अगर मैके वाले तंग दस्त हैं तो उम्मत के अहले खैर को तवुज्जुह देना चाहिये। अगर शौहर ने तलाक़ दी है तो बीवी शौहर के घर पर रहे, जिस लड़की की शादी हो गई है वह अपने शौहर के पास रहे। दूसरी लड़की और लड़का अपने बाप के पास रहें। अगर बाप ताकत रखते हुए नज़र अन्दाज़ करता है तो अहले महल्ला को उस पर दबाव डालना चाहिये, लड़की और लड़के को चाहिये कि ज़बरदस्ती बाप के घर रहें बाप का खाएं पियें, दुश्वारी हो तो महल्ले के मुसलमानों से मदद लें, समझ में नहीं आता कि जवान लड़का और लड़की को बाप क्यों नज़र अन्दाज़ किये हुए हैं। महल्ले वालों को हक़ीक़त का पता लगा कर मसअले को हल करा देना चाहिये।

ज़रूरत मन्दों की मदद करना नेकी है।

गाजर
दीहाती मुआलिज से ग्रीहित

गाजर मशहूर जड़ है। खूब पैदा होती है। (यह दो तरह की होती है पीली (लाली लिये हुए) और काली। पीली वाली को विलायती भी कहते हैं और अधिकतर यही खाई जाती है, लेकिन काली जियादा फाइदेमन्द है। अनुवादक) यह कच्ची भी खाई जाती है और उबाल कर भी, हलुवा बनाकर भी खाई जाती है और दवा के तौर पर भी। सब्जी सालन के तौर पर भी खाते है।

गाजरों में काफी गिजाइयत (खाद्य पद्धार्थ) है। यह बदन को ताकतवर और फर्बा (शक्तिमान तथा मोटा) बनाती है। दिल व दिमाग को भी ताकत देती है, पेशाब खोल कर लाती है, मर्दाना ताकत भी बढ़ाती है।

नई तहकीक (खोज) में भी यह फाइदे माने गये हैं। गाजर में, शकर नमक तो पाये ही जाते हैं इनके अलावा ए,बी,सी बिटामिन भी पाए जाते हैं। गाजर बदन को सिहत व ताकत देने के लिये बहुत अच्छी चीज है। दिमाग, पट्ठों और आंखों को ताकत देती है हड्डियों को मजबूत बनाती है। फौलादी जुज्व (लौह अंश) रखने के सबब खून की पैदाइश को बढ़ाती है और खून की कमी के रोग में बहुत फाइदा करती है।

अगर गाजर कच्ची खाना चाहे तो ताजा मुलायम गाजर खाना खाने के बाद खूब चबाकर खायें, इससे दान्तों और मसूढ़ों को भी फाइदा पहुंचेगा और गिजा के हज्म (पचन) में भी मदद मिलेगी और सिहत व ताकत भी। गाजर उबाल कर खाएं तो पानी उसी में जज़्ब रस कर दें (सुखा दें)।

गाजर दिल की कमजोरी और धड़कन के लिये भी बड़ी मुफीद (लाभदायक) है। इस के लिये गाजर पर साफ़ मिट्टी गंध लगा कर फिर उसे तनूर या चूल्हे की भूभूल मेंपका ले, फिर मिट्टी अलग कर के गाजर चीर कर उसकी बीच की हड्डी अलग करें और तश्तरी में शाम को रख दें और सुबह को गुलाब का अरक छिड़क कर खाएं, दिल के लिये बहुत मुफीद है। गाजरों का रस दूध में मिलाकर पीने से बदन को ताकत मिलती है और दिमाग, पठ्ठे और बीनाई (दृष्टि) को मुव्वत (बेल) मिलता है।

न मारा आप को जो,
खाक हो इकसीर बनजाता।
अगर पारे को ऐ इक्सीरगर,
मारा तो क्या मारा।।

मो० असलम

(S) 268845, 213736

(R) 268177, 254796

हाजी सफीउल्लाह
एण्ड सन्स
ज्वैलर्स

नगीना मार्केट
अकबरी गेट, लखनऊ

गड़बड़ झाला के सामने,
अमीनाबाद रोड, लखनऊ

आयतुलकुर्सी का महत्व

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदक–ए–फित्र की निगरानी पर मुझे नियुक्त फरमाया था। रात में एक व्यक्ति आया और दोनों हाथ भर कर गल्ला लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहाः– मैं तुझे जरूर रसुलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले चलूंगा। उसने कहा मैं एक मुहताज हूं मेरे ऊपर मेरे बाल बच्चों का बोझ है और मैं सख्त जरूरतमन्द हूं। हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते है मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फरमाया : अबू हुरैरा! तुम्हारे कैदी ने कल क्या किया? (अल्लाह तआला ने आप को इस वाकिअे की खबर दे दी थी) मैंने अर्ज किया–या रसूलल्लाह! उसने अपनी अत्यंत आवश्यकता और बाल बच्चों के बोझ की शिकायत की, इसलिये मुझे उस पर दया आयी और मैंने उसे छोड़ दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः खबरदार रहना उसने तुम से झूठ बोला है वह दुबारा आयेगा। मुझे रसूल्लल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान के कारण विश्वास हो गया कि वह दुबारा आयेगा। चुनांचे मैं उसकी ताक में लगा रहा। वह आया और अपने दोनो हाथों से गल्ला भरना शुरू कर दिया। मैंने उसे पकड़ कर कहा कि मैं तुझे रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अवश्य ले जाऊंगा। उसने कहा कि मुझे छोड़ दीजिये मैं जरूरतमन्द हूं मेरे ऊपर बाल बच्चों का बोझ है अब भविष्य में मैं नहीं आऊंगा। मुझे उस पर रहम आया और मैंने उसे छोड़े दिया। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फिर फेरमायाः अबू हुरैरा! तुम्हारे कैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज कियाः या रसूलल्लाह! उसने अपनी अत्यंत आवश्यकता और बीवी बच्चों के बोझ की शिकायत की इसलिये मुझे उस पर दया आ गई और मैंने उसे छोड़ दिया। आप ने इरशाद फरमायाः सचेत रहना, उसने झूठ बोला है वह फिर आयेगा। चुनांचि मैं उसकी ताक में रहा। वह आया और दोनों हाथों से गल्ला भरने लगा। मैंने उसे पकड़ कर कहा कि मैं तुझे अवश्य रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊंगा। यह तीसरा और अंतिम अवसर है, तूने कहा था भविष्य में नहीं आऊंगा मगर तू फिर आगया। उसने कहा मुझे छोड़ दो मैं तुम्हे ऐसे कालिमात सिखाउंगा कि अल्लाह तआला उनकी वजह से तुम्हें लाभ पहुंचायेंगे। मैनें कहा वह कालिमात क्या हैं? उसने कहा जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतलकुर्सी पढ़ लिया करो। तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ से एक सुरक्षा करने वाला नियुक्त होगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे करीब नहीं आयेगा। रावी कहते है कि सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भलाई के कामों पर बहुत ज़ियादा हरीस मास्टर लतीफ़ अहमद एम० ए० थे। (इसलिये अंतिम बार भलाई की बात सुनकर उसे छोड़ दिया) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमायाः ध्यान से सुनो यद्यपि वह झूठा है लेकिन इस बात में वह तुमसे सच बोल गया। अबू हुरैरा! तुम जानते हो कि तुम तीन रातों से किससे बात कर रहे थे। मैंने कहा नहीं! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमायाः वह शैतान था (जो इस तरह छलकपट से सदक़ात के माल में कमी करने आया था) (बुखारी)

हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रजियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि शैतान ने यूँ कहाः तुम अपने घर में आयतलकुर्सी पढ़ा करो, तुम्हारे पास कोई शैतान जिन्न वगैरह न आयेगा। (तिर्मिजी)

सूरः–ए–बक़रः की आयत नं. २५५ आयतुलकुर्सी कहलाती है।

Md. Salman Ansari
Proprietor
Mob: 9335214913

H.I.Computer Institute of (Software & Hardware)

उसके अलावा

उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश और अरबी की कम्पोजिंग व प्रिंटिंग के लिए सम्पर्क करें।

एच.आई.कम्प्यूटर इंस्टीट्यूट, नदवा रोड, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

जिन्न और इन्सान में शादी

अबू मर्गूब

शैख सुलैमान अश्कर की किताब "आलमुलजिन्नि वश्शयातीन" के सफ़ह २० पर "लवामिअ, अनवारूल बहीयः" के हवाले से एक हदीस नक्ल है कि "जिन्न बच्चे जनते हैं जैसे इन्सान जनते है, वह गिन्ती में जियादा हैं" और इसी किताब अनवारूल बहीया जिल्द सफ़ह २२२ से वहब का कौल नक्ल किया है कि "जिन्नों की कई किस्में हैं खालिस जिन्न हवा की तरह है न खाते हैं न पीते हैं न मरते हैं न बच्चे पैदा करते हैं और इन में से कुछ हैं, जो खाते पीते हैं, बच्चे पैदा करते है, शादी विवाह करते हैं और मरते हैं।" लेकिन वहब ने अपने इस कौल की कोई दलील नहीं लिखी। एक कमजोर रिवायत में है कि अल्लाह तआला जब इन्सान को एक औलाद देता है तो शैतान को भी एक औलाद देता है वही इन्सान का करीन यानी हमज़ाद कहलाता है। लेकिन शैतान को यह बच्चा किस तरह मिलता है इसकी कैफीयत नहीं बताई गई।

आलमुलजिन्नि वश्शयातीन के सफह २१ पर है कि हसन, कताद; हकम, इस्हाक और इमाम मालिक जिन्न व इन्स के दार्मयान निकाह करने को जाइज़ समझतें है। अलबत्ता इमाम मालिक (रह०) फरमाते है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता, इसलिये कि अगर कोई औरत हामिला पाई जाएगी और उस से मालूम किया जाएगा कि तेरा शौहर कौन है तो कहेगी जिन्न, इस तरह फसाद फैलेगा।

अहनाफ़ के यहां जिन्नों और इन्सानों में निकाह जाइज़ नहीं है। मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूकी लखनवी (रह०) ने इल्मुलफिक़्ह जिल्द ६ के सफ़ह ५६ पर दूसरी जिन्स होने के सबब जिन्नों से निकाह नाजाइज़ लिखा है।

जाहिर है कोई जिन्न या जिन्नीया इन्सानी शक्ल में आकर निकाह करे जिस के दो गवाह हों तो उनके निकाह पर किसे कलाम हो सकता है। कोई मुसलमान मर्द या औरत अगर उसे मालूम हो कि यह जिन्न औरत है या जिन्न मर्द (नर) है इस ने मुझ से निकाह के लिये इन्सानी शक्ल इख्तियार कर ली है तो उस से निकाह न करना चाहिये इसलिये कि अहनाफ़ के यहाँ तो वह निकाह होगा ही नहीं, इमाम मालिक भी इसे ना पसन्द फ़रमाते हैं।

मुझे एक आलिम ने सुनाया कि वह अपने एक आलिम दोस्त से मिलने गये और उन के मर्दाने कमरे में सलाम करके दाखिल हो गये तो देखा उन के पास एक खूबसूरत खातून बैठी हैं जल्दी से वापस लौटे, अभी दरवाजे से बाहर हुए ही थे कि उन के दोस्त ने आवाज़ दी और अन्दर बुलाया। वह अन्दर गये तो अब मौलाना अकेले थे। इनकी हैरत देखकर वह बोले अरे वह तो आप की मामी थीं। यह समझ गये और कहा कि मगर इल्मुलफिक़्ह में तो लिखा है कि जिन्नों से मुनाकहत नाजाइज़ है। वह मौलाना खामोश रहे। लगता है ग़ैर अहनाफ़ के कौल पर अमल किया होगा। बहरहाल जिन लोगों ने जिन्न या जिन्नीया से निकाह किया, शक्ल बदले बिग़ैर उन से जिन्सी तअल्लुक का मुकम्मल हज़्ज़ (स्वाद) हासिल नहीं हो सकता।

इन बयानात से यह बात तो यकीनी तौर पर मालूम हुई कि शैतान की औलाद है और उसके बढ़ने का सिलसिला भी है। यह भी मालूम हुआ कि शैतान के अलावा दूसरे जिन्नों के भी बच्चें होते हैं लेकिन उन की पैदाइश किस तरह होती है यह बात किताब व सुन्नत में नही बताई गई। जो अक्वाल इस सिल्सिले में आए हैं चूंकि वह सहीह मर्फ़ूअ़ हदीस से साबित नहीं है इसलिये उनके ग़लत होने का इम्कान है। उनकी पैदाइश और बनावट के फर्क़ के लिहाज़ से कहा जा सकता है कि इब्लीस की औलाद तो उसी गन्दे तरीके से होता होगी जिस का बयान पिछले अंकों में आ चुका। कुछ उड़ने वाले जिन्नों की पैदाइश चिड़ियों और सांप बिच्छू की तरह अण्डों से होती होगी और कुछ बाकाअ़िदा निकाह के बाद तअ़ल्लुकात से पैदा होते होंगे। न इन तफ़्सीलात (विस्तार) की हम को जरूरत थी न यह तफ़्सीलात हमको बताइ गईं और जो मुफस्सिरीन के अक़्वाल में मिलता है कि मल्क–ए–सबा जिन्नीया की बेटी थी तो यह जब ही मुम्किन है जब जिन्न या जिन्नीया इन्सानी शक्ल में आ जायें। वल्लाहु अअ़लमु बिस्सवाब।

अल्लाह निकट है और दुआ कबूल करने वाला है

अब्दुर्रशीद खैरानी

इस संसार को पैदा करने वाला सर्वशक्तिमान अल्लाह अत्यन्त कृपाशील (रहमान) व दयावन्त (रहीम) है और पुकारने वाले की पुकार को सुनता है। धरती और आकाशों में जो कुछ है वह अल्लाह उस से बाखबर है और यह अल्लाह के लिए अत्यन्त आसान है। इसी तरह हर जीव जो कुछ कर रहा है, उसकी जानकारी अल्लाह को है। अल्लाह तआला ने लोगों को अंधेरे से निकाल कर प्रकाश में लाने, रास्ता दिखाने और सत्य व असत्य को अलग–अलग दर्शाने वाला कुरआन अपने अन्तिम नबी (दूत) हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतार कर मानव जगत पर अत्यन्त कृपा की है।

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला का फरमान है–

(ऐ नबी ! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मेरे बन्दे मेरे बारे में सुवाल (प्रश्न) करें तो कह दीजिये कि मैं (अल्लाह) बहुत ही करीब हूं। हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी वह मुझे पुकारे, मैं कुबूल करता हूं। बस लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर इमान रखें, इसी में उनकी भलाई है।" (सूरः बकरः आयत १८६)

कुर्आन पाक की सूरः अल–आराफ की आयत ५५ में है और चुपके चुपके पुकारो। निस्सन्देह वह हद (सीमा) से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

पवित्र कुर्आन की सूरः बकरः की आयत १८६ में सर्वशक्तिमान अल्लाह लोगों को यह सन्देश दे रहा है कि हर व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अल्लाह तआला ही को पुकारे क्योंकि अल्लाह तआला हर व्यक्ति के समीप ही है और उसकी पुकार को सुनता है।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक ग्रामीण (देहाती) ने पूछा कि क्या हमारा रब करीब है? यदि करीब है तो हम उससे अपनी बात धीरे से कहें या दूर है तो हम ऊँची–ऊँची आवाजों से उसे पुकारे? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोश रहे, इस पर सूरः बकरः की उपरोक्त आयत नम्बर १८६ नाज़िल हुई (इब्ने अबी हातिम)

हजरत अबू मूसा अशअ़री रजियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक लड़ाई में थे। हर ऊंचाई पर चढ़ते समय और हर घाटी में उतरते समय ऊंची आवाज से "अल्लाहु अक़बर" (अल्लाह महान है) कहते जाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे करीब आकर फरमानें लगे– लोगो अपनी जानों पर रहम करो, तुम किसी कम सुनने वाले या दूर वाले को नहीं पुकार रहे हो, जिसे तुम पुकार रहे हो वह तो तुम से तुम्हारी जान वाली रग से भी ज़ियादा करीब है। ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस सुनो, जन्नत का खजाना ला हौला वलाकुव्वता इल्ला–बिल्ला है। (मुसनद अहमद)

मुसनद अहमद की एक और हदीस में है कि हजरत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा मेरे साथ जैसा अक़ीदा रखता है, मैं भी उसके साथ वैसा ही बरताव करता हूं, जब भी वह मुझसे दुआ मांगता है मैं उसकी दुआ कुबूल करता हूं।

हजरत अबू हुरेरह (रजि०) कहते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा जब मुझे(अल्लाह को) याद (स्मरण) करता है और उसके होंठ मेरे जिक्र में हिलते हैं तो मैं उसके साथ होता हूं।

पवित्र कुर्आन में भी अल्लाह तआला का फरमान है– "बेशक अल्लाह परहेज़गारों (संयमीयों) के साथ है और उन के साथ है जो नेकी करने वाले है। (अन्नहलः १२८)

इस कुरआनी आयत से यह स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला दुआ करने वालों की दुआ को रद्द नहीं करता और नाही इस दुआ से अनजान व बेखबर होता है इस आयत में हर व्यक्ति को अपनी हर जरूरत, हर मुसीबत से छुटकारा हेतु और हर कार्य के लिए अल्लाह तआला को पुकारने और

अल्लाह ही से मांगने के लिए कहा गया है और दुआ करने वाले की दुआ व पुकार को बेकार न होने का यकीन दिलाया गया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान साथी हजरत सलमान फारसी (रजि०) कहते हैं कि रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– कोई कोई बन्दा जब अल्लाह तआला के सामने हाथ उठाकर दुआ करता है तो अल्लाह रहमान व रहीम (दयावान व कृपाशक्ति) उस व्यक्ति के हाथों को खाली फेरते हुए शर्माता है। (मुसनद अहमद)

हजरत अबू सईद खुदरी (रजि०) कहते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला से ऐसी दुआ करता है जिसमें न गुनाह (पाप) हो, न रिश्ते–नाते टूटते हों तो उसे अल्लाह तआला तीन बातों में से एक जरूर ही देता है या तो–

१. उसकी दुआ उसी वक्त स्वीकार कर उसकी मुंह मांगी चाहत पूरी करता है, या

२. उस दुआ को जमा रखता है और आखिरत में उसका बदला अता करता है, या

३. या उस दुआ की वजह से उस पर कोई आनेवाली मुसीबत (विपत्ति) को टाल देता है।

इस पर लोगों ने यह सुनकर कहा कि हुजूर फिर तो हम अधिक से अधिक दुआ मांगा करेंगे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया – फिर अल्लाह तआला के यहां कया कमी है। (मुसनद अहमद)

हजरत अबू हुरैरा (रजि०) से उल्लेखित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– जब तक कोई व्यक्ति दुआ में जल्दी न करे, उसकी दुआ जरूर कुबूल होती है। जल्दी करना यह है कि कहने लगे–मैंने तो भरसक दुआ मांगी लेकिन अल्लाह कुबूल नहीं करता।(मुअत्ता इमाम मालिक)

मुस्लिम में यह भी है कि कुबूल न होने का खयाल करके वह निराशा में दुआ मांगना छोड़ देता है यह भी जल्दी करना है।

मुसनद अहमद की हदीस में है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) कहते है कि रसूल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि दिल बर्तन जैसा है। कुछ लोग अन्य लोगों से (अपने दिल की) अधिक निगरानी करने वाले होते है। ऐ लोगो, जब तुम लोग अल्लाह तआला से दुआ मांगो तो उसकी कबूलियत का भरोसा रखा करो, सुनो गफलत (लापरवाही) करने वालों की दुआ अल्लाह कबूल नहीं करता।

इब्ने मरविया की हदीस में है कि हजरत आयशा सिद्दीका(रजि०) ने एक बार रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस आयत के बारे में पूछा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की– ऐ अल्लाह, आयशा (रजि०) के इस सवाल का क्या जवाब है। इस पर हजरत जिब्रइल अलैहिसलाम आए और फरमाया– अल्लाह तआला आपको सलाम कहता है और फरमात है कि इस आयत से आशय वह व्यक्ति है जो नेक आमाल(अच्छे काम) करने वाला हो और सच्ची नियत और नेकदिली के साथ मुझे (अल्लाह को) पुकारे तो मै (अल्लाह) लब्बैक (हाजिर हूं) कहकर उसकी हाजत जरूर पूरी करता हूं।

एक हदीस में है कि रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयत की तिलावत (पाठ) की फिर फरमाया– अल्लाह तूने दुआ का हुक्म दिया है और इजाबत (दुआ कुबूल करने) का वायदा फरमाया है, मै हाजिर हूं। हम्द व नात (प्रशंसा व गुनगान) और यह संसार तेरे ही लिए है, तेरा कोई सहभागी नहीं, मेरी गवाही है कि तू अकेला, बेमिसाल और एक ही है, तू पाक है औलाद व बीवी से पाक है, तेरे जैसा कोई नहीं और तेरा हमसर कोई नहीं, मेरी गवाही है कि तेरा वअदा सच्चा है, तेरी मुलाकात सच्ची है। जन्नत, दोजख, और मृत्यु उपरान्त (आखिरत) पुनः जीवित होना, यह सब सत्य है। (इब्ने मरविया)

कुरआन की सूरः अअ़राफ़ की आयत ५५ में अल्लाह तआला का फरमान है कि तुम लोग अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके–चुपके (धीमी आवाज से) पुकारा करो। बेशक अल्लाह हद से जियदती करने वालों को पसंद नहीं करता"

इन फरमानों में बताया गया है कि खुलूस, आ़जिजी और धीमी आवाज से अल्लाह को पुकारा करो,

दुआ करते वक्त अल्लाह पर पूरा भरोसा रखना चाहिए।

अल्लाह की वहदानियत पर पक्का यकीन रखना चाहिए तिरमिजी की हदीस के मुताबिक रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि अल्लाह से इस यकीन के साथ दुआ मांगे कि वह कबूल करेगा

और जान रखो कि अल्लाह गाफिल और गैर–हाजिर दिल की दुआ कुबूल नहीं करता।

हजरत फुजाला बिन अब्दुल्लाह (रजि०) फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना कि एक शख्स नमाज़ के बाद दुआ मांग रहा है मगर उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद नहीं भेजा आप (सल्ल०) ने कहा इस शख्स ने दुआ मांगने में जल्दी की फिर उस शख्स को बुलाकर फरमाया– तुम में से जब कोई नमाज़ पढ़ चुके तो पहले अल्लाह की हम्द और तारीफ करनी चाहिए फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद भेजना चाहिए फिर इसके बाद जो चाहे अल्लाह से मांगे।

दुआ की कबूलियत के लिए रिज़्क़ का हलाल होना ज़रूरी है

हजरत सअद इब्ने वक्कास (रजि०) ने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया कि मेरे लिए दुआ कीजिये कि मैं "मुस्तजाबुद्दअवात" बन जाऊँ (यानि ऐसा शख्स जिसकी दुआ कुबूल हो) आप (सल्ल०) ने फरमाया– ऐ सअद ! अपना खाना हलाल (जायज तरीके से कमाना) बनाओ तो तुम "मुस्तजाबुद्दअवात" हो जाओगे।

एक दूसरी हदीस में है कि एक कौम ने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि कुरआन पाक की सूरः बकरः की आयत १८६ में है–जब मेरे बन्दे मुझसे दुआ करते है तो मैं उसके करीब होता हूं। दुआ करने वाला जब दुआ करता है तो उसकी दुआएं कुबूल करता हूं। उस कौम के शख्स ने कहा कि मैंने सारी रात दुआ की मगर मेरी दुआ कुबूल नहीं हुई इसलिए मैं आपकी खिदमत में सुबह हाजिर हुआ हूं।

आप (सल्ल०) ने फरमाया–आदमी का खाना हराम हो, पीना हराम हो, फिर अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ उठा कर दुआ करे– हे परवरदिगार तो कहाँ से उसकी दुआ कुबूल होगी।

इसलिए हराम कामों से अपने आपको बचाते हुए खुले दिल से गिड़गिड़ाकर अजिज़ी के साथ अपनी हर जरूरत के लिए अल्लाह से दुआ करते रहना चाहिए और यह पक्का यकीन रखें कि अल्लाह हमारी दुआ जरूर कुबूल करेगा।

कहां मिलती है ये दौलतो, इज्ज़त
हुई दरबार में किसकी रसाई
ये सब मेहनत मशक़्क़त का सिला है
जो सारी उम्र इस दर पर गवाई
रही दरबार में हाजिर जो हमदम
यह निअ़मत और दौलत हाथ आई
किया जो जिन्दगी को तल्ख तूने
ज़ओ़फ़ी में यह राहत हाथ आई
ये तौफीक़े दुआ का बस सबब है।
बुढ़ापे में तुझे पहुंची भलाई
लगाई थी जो तूने आस बेहतर
जो की उम्मीद तूने वो बर आई।

ख़ैरून्निसा बेहतर

ज़माने की हालत

अमतुल्लाह तस्नीम

ज़माने की हालत कहूं मै कि क्या है।
हर एक खुद परस्ती में यां मुबतला है।।
न उक्बा का डर है न परवाए दुन्या।
बस आराम अपना हर इक चाहता है।।
जो दीनी उखूवत थी कम्याब है वह।
यहां अब तो भाई से भाई जुदा है।।
दिलों में है बुग्ज़ो हसद कार फर्मा।
हर इक दूसरे का बुरा चाहता है।।
न इज्ज़त न दौलत न हिक्मत है बाकी।
दिमागो में लेकिन तकब्बुर भरा है।।
बड़ों की है इज्ज़त न छोटों से उल्फ़त।
कहूं क्या जमाने की बिगड़ी हवा है।।
हमैं है फक़त ऐब जूई से मतलब।
जों कुछ रह गया है यही रह गया है।।
गुज़रती है ग़फ़लत में रातें यहां की।
सदाए जरस है न बांगे दिरा है।।
हवादिस के गिर्दाब में हम फंसे है।
सफीना कोई दम में अब डूबता है।।
हवा इस जमाने की अच्छी नहीं है।
हवा व हवस में हर इक गुम हुआ है।।
जिसे नाज था अपने होशो खिरद पर।
वह सर आज क़िस्मत के आगे झुका है।।
खबर तू न लेगा तो मिट जाएंगे हम।
है कश्ती भंवर में मुखालिक हवा है।।
निगाहे करम बेकसो पर है लाज़िम ।
इलाही तेरी ज़ात का आसरा है।।
पेरशान तस्नीम क्यों इस कदर है।
मुसलमान का आप हामी खुदा है।।

●●●

उम्मुल मोमिनीन

ह़ज़रत हफ़सा (रजि०)

सादिका तस्नीम फारूकी

नाम हफ़सा (रजि०) जो हजरत उमर (रजि०) की बेटी थी, जिनका सिसिल–ए–निसब यह है कि हफ़सा (रजि०) बिन्ते उमर (रजि०) बिन ख़त्ताब बिन नुफील बिन अब्दुल अज़्ज़ा बिन रबाह बिन अब्दुल्लाह बिन कुर्त ज़र्राह बिन अदी बिन जुवी बिन फ़हर बिन मालिक। इसी तरह मां का नाम ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन था जो मशहूर सहाबी हजरत उस्मान (रजि०) बिन मज़ऊन (रजि०) की बहन थीं और खुद भी सहाबिया थीं। हजरत हफ़सा (रजि०) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) सगे बहन भाई हैं, हज़रत हफ़सा रजि० नुबूवत से पांच साल पहले पैदा हुई, उस समय कुरैश खान–ए–कअ़बः के बनाने मे लगे हुए थे।

पहला निकाह ख़नसा रजि० बिन हुज़ाफा से हुआ जो खानदान बनू सहम से थे।

मां बाप और पति के साथ मुसलमान हुईं।

पति के साथ मदीना को हिजरत की, ग़ज़व–ए–बद्र में खैनस रजि० ने जख्म खाए और वापस आकर उन ही ज़ख्मों की वजह से शहादत पाई, इद्दत के बाद हजरत उमर रजि० को हज़रत हफ़सा रजि० के निकाह की फ़िक्र हुई, उसी ज़माना में हज़रत रूकय्या रजि० का इन्तिकाल हो चुका था, इस बिना पर हज़रत उमर रजि० सबसे पहले हज़रत उस्मान (रजि०) हफ़सा (रजि०) के निकाह की फ़रमाइश की। उन्होंने कहा मैं इस पर ग़ौर करूँगा थोड़े दिन के बाद मुलाकात हुई तो साफ इन्कार किया, हज़रत उमर रजि० ने निराश होकर हज़रत अबू बक्र से ज़िक्र किया, उन्होंने ख़ामोशी इख़्तियार की, हज़रत उमर रजि० को उनके व्यवहार से दुख हुआ, उसके बाद खुद मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत हफ़सा रजि० से निकाह की फ़रमाइश की, निकाह हो गया तो हज़रत अबू बक्र रजि० हज़रत उमर रजि० से मिले और कहा कि जब तुम ने मुझसे हफ़सा रजि० के निकाह की ख्वाहिश की और मै चुप रहा तो तुम को बुरा लगा परन्तु मैंने इसी बिना पर कुछ जवाब नहीं दिया कि रसूल (सल्ल०) ने उनका ज़िक्र किया था और मैं उनका राज़ खोलना नहीं चाहता था, अगर रसूलुल्लाह (सल्ल०) का उनसे निकाह का इरादा न होता तो मैं उसके लिए तैयार था।

(सही बुख़ारी भाग २ पेज ५७१ व इसाबा भाग ८ पेज ५१)

हज़रत हफ़सा (रजि०) ने शअ़बान ४५ हि० में मदीना में इन्तिकाल किया, यह अमीर मुआ़विया रजि० की खिलाफ़त का ज़माना था, मरवान ने जो उस समय मदीना का गर्वनर था, नमाजे जनाज़ः पढ़ाई, और कुछ दूर तक जनाज़ः को कांधा दिया, उसके बाद हज़रत अबू हुरैरा रजि० जनाज़ः को कब्र तक ले गये, उनके भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० और उनके लड़कों आसिम, सालिम अब्दुल्लाह, हमज़ः ने कब्र में उतारा।

हज़रत हफ़सा रजि० के सन् वफात में एख्तिलाफ़ है, एक रिवायत है कि जुमादल ऊला ४१ हि० में वाफात पाई, उस समय उनकी उम्र ५१ साल की थी परन्तु अगर सन वफात ४५ हि० माना जाए तो उनकी उम्र ६३ साल की होगी, एक रिवायत है कि उन्होंने हज़रत उस्मान रजि० की खिलाफत में २७ हि० में इन्तिकाल किया, यह रिवायत इस बिना पर पैदा हो गयी कि वहब ने इब्नि मालिक से रिवायत की है कि जिस साल अफ्रीका फ़त्ह हुआ हज़रत हफ्सा ने उसी साल वफात पाई और अफ्रीका हज़रत उस्मान रजि० की ख़िलाफत में २७ हि० में विजय हुआ, परन्तु यह बहुत बड़ी गलती है, अफ्रीका दो बार विजय हुआ इस दूसरी विजय का फ़ख्र मआविया रजि० बिन ख़दीज को हासिल है, जिन्होंने अमीर मुआविया रजि० के ज़माना में हमला किया था।

हजरत हफ़सा रजि० ने वफात के समय हज़रत अब्दुल्लाह रजि० बिन उमर को बुला कर वसीयत की और ग़ाबा में जो जायदाद थी जिसे हज़रत उमर रजि० उनकी देखरेख में दे गये थे उसको सदकः करके वक़्फ़ (समर्पण)

कर दिया।(ज़रक़ानी भाग ३ पेज २७१)

कोई सन्तान नहीं छोड़ी।

परन्तु उनकी यादगारे बहुत सी हैं और वह यह हैं, अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० हमज़: रजि० इब्ने अब्दुल्लाह सफ़या बिन्त अबू उबैद रजि० (ज़ौजा अब्दुल्लाह हारसा बिन वहब, मुत्तलिब बिन अबी वादिआ, उम्मे मुबश्शिर अनसारया, अब्दुल्लाह बिन सफ़वान बिन उमय्या, अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हिशाम।) (ज़रक़ानी भाग ३ पेज २७१)

हज़रत हफ़सा रजि० से ६० हदीसें मरवी हैं। जो उन्होंने आँहजरत (सल्ल०) और हज़रत उमर रजि० से सुनी थीं।

एक बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि अस्हाबे बद्र हुदैबिया जहन्नम में न जाएंगे, हज़रत हफ़सा रजि० ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तो फरमाता है "तुम में हर व्यक्ति जहन्नम पर से गुजरेगा।"

(फिर हम परहेज़गारों को नजात देंगे और ज़ालिमों को उसमें जानुओ पर गिरा हुआ छोड़ देंगे)

(मुसनद इब्ने हम्बल भाग ६ पेज २८५)

इसी शौक़ का असर था कि मुहम्मद (सल्ल०) को उनकी तअ़लीम की फ़िक्र रहती थी, हज़रत शफ़ा को चीवटी के काटे का मन्तर आता था। एक दिन वह घर में आयी तो हुजूर (सल्ल०) ने कहा कि तुम हफ़सा रजि० को मन्तर सिखा दो।

(मुसनद इब्ने हॅम्बल पेज २८१)

इब्ने सअ़द में उनके व्यवहार के सम्बन्ध में है:

वह (अर्थात हफ़सा रजि० दिन में रोज़ा रखने वाली और रात में इबादत करने वाली थी)

दूसरी रिवायत में है:

इन्तिकाल के समय तक रोज़े से रहीं।

एख़्तिलाफ़ से बहुत नफ़रत करती थी, जंगे सिफ्फ़ीन के बाद जब तहकीम का किस्सा सामने आया तो उनके भाई अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० उसको फितना समझ कर घर में बैठना चाहते थे, परन्तु हज़रत हफ़सा रजि० ने कहा कि हां इस में शामिल होने में में तुम्हारा कोई फ़ायदा नहीं मगर फिर भी तुम्हें शामिल रहना चाहिए, क्योंकि लोगों को तुम्हारी राय का इन्तिजार होगा और हो सकता है कि तुम्हारे अलग रहने से उनमें इख्तिलाफ़ पैदा कर दे।

(मुसनद भाग ६ पेज २८३ व मुस्लिम फितावुलफ़ितन जिक्र इब्ने स्याद)

दज्जाल से बहुत डरती थीं, मदीना में इब्ने स्याद नामक एक व्यक्ति था, दज्जाल के सम्बन्ध में मुहम्मद (सल्ल०) ने जो निशानियां बताई थी, उसमें बहुत सी मौजूद थी, उससे और अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से एक दिन रास्तें में मुलाकात हो गयी, उन्होंने उसको बहुत बुरा–भला कहा, उस पर वह इस कदर फूला कि रास्ता बन्द हो गया, इब्ने उमर रजि० ने उसको मारना शुरू किया, हज़रत हफ़सा रजि० को खबर हुई तो बोलीं तुम को उससे क्या मतलब? तुम्हें मालूम नहीं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया है कि दज्जाल के आक्रमण का उभारने वाला उसका गुस्सा होगा।

हज़रत हफ़सा रजि० के दिमाग में थोड़ी तेज़ी थी, मुहम्मद (सल्ल०) से कभी–कभी गुस्सा करतीं और बराबर का जवाब देतीं, अतः सही बुखारी में खुद हज़रत उमर रजि० से मरवी है कि "हम लोग जाहिलियत में औरतों को जर्रा बराबर भी इज्ज़त न देते थे। इस्लाम ने उनको ऊँचा किया और कुर्आन में उसके सम्बन्ध में आयते उतरीं तो उनको इज्ज़त व सम्मान का पता चला। एक दिन मेरी पत्नी ने किसी मामला में मुझ को राय दी, मैंने कहा, "तुम को राय व मश्वरः से क्या वास्ता" बोली, इब्ने ख़ताब ! तुम को थोड़ी सी बात की भी बर्दाश्त नहीं, जबकि तुम्हारी बेटी रसूल (सल्ल०) को बराबर का जवाब देती है, "यहां तक कि आप दिन–दिन भर ग़मगीन रहते हैं" में उठा और हफ़सा रजि० के पास आया, मैंने कहा बेटी ! मैंने सुना है तुम रसूल (सल्ल०) को बराबर का जवाब देती हो "बोलीं हां हम ऐसा करते हैं, मैंने कहा ख़बरदार मैं तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराता हूं, तुम उस औरत (हज़रत आइशा रजि०) की रेस न करो जिसको रसूल (सल्ल०) की मुहब्बत की वजह से अपने हुस्न (सुन्दरता) पर नाज़ (घमंड) है।

(बुख़ारी भाग २ पेज ५० किताबुल तफ़सीर व फतहुल बारी भाग ८ पेज ५०४)

तिर्मिजी में है कि एक बार हज़रत सफ़या रजि० रो रही थी, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तश्रीफ लाए और रोने की वजह पूछी, उन्होंने कहा, मुझ को हफ़सा रजि० ने कहा है कि "यहूदी की बेटी हो" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, हफ़सा ! अल्लाह से डरो, फिर हज़रत सफ़या रजि० से इरशाद हुआ, तुम नबी की बीवी हो, पैग़म्बर के निकाह में

हो, हफ़सा रजि० तुम पर किस बात में फ़ख़ (घमंड) कर सकती है।"

(तिर्मिजी बाब फ़ज़्ल अज़वाजुन्नबी सल्ल०)

एक बार हज़रत आइशा रजि० और हज़रत हफ़सा रजि० ने हज़रत सफ़ीया रजि० से कहा, हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के करीब तुम से ज्यादा इज़्ज़तदार हैं, हम आप (सल्ल०) की पत्नी भी है और चचा ज़ाद बहन भी, हज़रत सफ़या रजि० को बुरा लगा, उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से इसकी शिकायत की, आप (सल्ल०) ने फरमाया, तुम ने क्यों न कह दिया कि तुम मुझ से ज्यादा क्यों कर इज़्ज़तदार हो सकती हो मेरे पति मुहम्मद (सल्ल०), मेरे बाप हारून (अलै०) और मेरे चचा मूसा (अलै०) हैं।'

हज़रत आइशा हज़रत अब बक्र की और हफ़सा रजि० हज़रत उमर रजि० की बेटी थीं जो मुहम्मद (सल्ल०) के बहुत करीबी थे, इस बिना पर हज़रत हफ़सा रजि० और हज़रत आइशा (रजि०) भी और अज़वाज (पत्नी) के मुक़ाबले में आपस में एक थी, अतः क़िस्स–ए–तहरीम जो सन् १ हि० में पेश आया।

इसी क़िस्म के इत्तिफ़ाक़ का नतीजा था, एक बार कई दिन तक आँहज़रत (सल्ल०) हज़रत ज़ैनब रजि० के पास समय से ज़्यादा बैठे जिसकी वजह यह थी कि हज़रत जैनब रजि० के पास कहीं से शहद आ गया था, उन्होंने आप के सामने पेश किया, आप को शहद बहुत महबूब था आपने उसको खाया, उसमें निश्चित समय से देर हो गयी, हज़रत आइशा रजि० को रश्क हुआ, हज़रत हफ़सा रजि० से कहा रसूल (सल्ल०) जब हमारे और तुम्हारे घर में आएं तो कहना चाहिए कि आप के मुंह से भग़ाफिर की बू आती है, (मग़ाफ़ीर की बू का इज़्हार करना कोई झूठ बात न थी) फूलों से शहद की मक्खियां रस चूसती हैं) आँहज़रत (सल्ल०) ने कसम खा ली कि मैं शहद न खाऊँगा, इस पर कुर्आन मजीद की यह आयत उतरी।(सही बुख़ारी भाग २ पेज ७२१)

ऐ पैग़म्बर! अपनी पत्नियों की खुशी के लिए अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ हराम क्यों करते हो?

कभी–कभी (हज़रत हफ़सा (रजि०) और आइश (रजि० में आपस में इर्ष्या व दुश्मनी का इज़हार भी हो जाया करता था, एक बार हज़रत आइशा (रजि०) और हज़रत हफ़सा रजि० दोनों आँहज़रत (सल्ल०) के साथ में सफ़र में थी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) रातों को हज़रत आइशा रजि० के ऊँट पर चलते थे और उनसे बातें करते थे, एक दिन हज़रत हफ़सा रजि० ने हज़रत आइशा रजि० से कहा कि आज रात को तुम मेरे ऊँट पर और मैं तुम्हारे ऊँट पर सवार हूँ ताकि अलग मन्ज़र देखने में आए, हज़रत आइशा रजि० राज़ी हो गयीं। आँहजरत (सल्ल०), हज़रत आइशा रजि० के ऊँट के पास आए जिस पर हफ़सा रजि० सवार थीं, जब मन्जिल पर पहुंचे और हज़रत आइशा रजि० ने आप को नहीं पाया तो आप को बहुत दुख हुआ।

फरमाया रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि निकाह मेरी सुन्नत है और फरमाया : जिसने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वह मुझ में से नहीं।

घरेलू जिन्दगी में मर्द की हैसियत

इदारा

मर्द औरतों पर हाकिम हैं इस सबब से कि अल्लहा तआला ने बअज़ों को बअज़ों पर बड़ाई दी है और इस सबब से कि मर्दों ने अपना माल खर्च किया है। (अन्निसा : ३४)

मर्द को कुर्आने मजीद ने कव्वाम कहा है कि जिसका तर्जुमा हाकिम किया गया है। अस्ल में कव्वाम उस शख्स को कहते हैं जो कुछ लोगों या इदारे (संस्था) को चलाने और ठीक ठाक रखने का जिम्मेदार होता है। घरेलू जिन्दगी भी एक मुनज्जम इदारा (व्यवस्थित संस्था) जिसके दुरूस्त होने पर समाज के सुधार का इन्हिसार (निर्भरता) है। इस इदारे को दुरूस्त रखने और चलाने की जिम्मेदारी मर्द पर रहती है इसलिये वही इसका कव्वाम अर्थात हाकिम है। चूंकि घरेलू नज़्म (व्यवस्था) को ठीक रखने की जिम्मेदारी मर्द की तबअी कुव्वतों (प्राकृतिक शक्तियों) के सबब उसे दी गयी हैं इसलिये उसको औरतों पर बड़ाई हासिल (प्राप्त) है। फिर जिन्दगी का दार व मदार (निर्भरता) माल पर है और मर्द अपनी मेहनत से माल कमा कर खुशी खुशी अपने घर वालों पर खर्च करता है इसलिये भी उसको औरतों पर बड़ाई हासिल है। लेकिन मर्द की बड़ाई औरतों पर बयान किये हुए सबबों से सिर्फ इस दुन्या में है, मगर आखिरत में फ़ज़ीलत (बड़ाई) का इन्हिसार हर एक के लिये शरीअत के मुताबिक अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में है। अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त में यहां जिस का दर्जा जितना बढ़ा होगा उसी के लिहाज से वहां उसको बड़ाई और इज्जत मिलेगी मर्द हो या औरत।

अल्लाह का शुक्र

इदारा

अल्लाह का करम व इहसान है कि हम "सच्चा राही" की तीन मंजिलै पूरी कर के चौथी में कदम रख रहे हैं। यह मार्च का परचा सच्चा राही के नये साल का पर्चा है। हम सब यानी "सच्चा राही" का स्टाफ और उस के कामों में हिस्सा लेने वाले, सम्पादक और उसके सहायक, लेखक, संरक्षक, सिक्रेटरी, मैनेजर, प्रेषक, किलर्क, कम्पोजीटर, एजन्ट और पाठक भी इस तौफीक पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और आइन्दा (भविष्य) के लिये उस से तौफीक मांगते हैं कि वह हम सब को उसी काम की तौफीक दे जिस से वह राजी हो।

इस वक्त हम सोच रहे है कि जब मुअज्जिन अजान कहे तो उसका जवाब देना चाहिये और अस्ल जवाब तो यह है कि मस्जिद पहुंचने की तैयारी मे लग जाना चाहिये लेकिन उलमा ने लिखा है कि अजान का जवाब अल्फाज से (शब्दों द्वारा) देना भी वाजिब है वह इस तरह कि मुअज्जिन जो कुछ कहे उस के पीछे हम भी वही कहते जाएं लेकिन जब मुअज्जिन हय्य अलस्सलात व हय्य अलल फ़लाह कहे तो इन कालिमात को भी दुहराएं और "ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अजीम भी कहें। इस लिये कि "हय्य अलस्सलात और हय्य अलल्फलाह कह कर मुअज्जिन कहता है आओ नमाज अदा करने के लिये, आओ नमाज के लिये, आओ नमाज पढ़कर काम्याबी पाने के लिये आओ काम्याबी के लिये तो हम हर बार जवाब देते हैं "ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीयिअजीम" ताकत व कुव्वत तो सिर्फ अजीम जात अल्ला के पास है वही ताकत देगा तो हम मस्जिद पहुंच कर नमाज अदा कर सकेंगे।

कारिईने किराम (आदर्णीय पाठको) जो कुछ हुआ अल्लाह की तौफीक से हुआ और जो कुछ होगा अल्लाह की तौफीक से होगा अल्लाह की तौफीक से अब तक हम जो कुछ आप की खिदमत में पेश कर सके हैं उसमें जो अच्छा है वह महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से है और जो खराब है वह हमारी कोताही से। जिन पाठकों पर हमारी कोताहियां नहीं जाहिर हो सकी उस पर भी हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि उस सत्तारूल अुयूब ने हमारे ऐब छुपा दिये और जिन पाठकों पर हमारी कोताहियां खुल गई हम उनसे मुआफी भी चाहते है और उनसे दरख्वास्त करते हैं कि वह मुस्तक्बिल (भविष्य) के लिये अच्छे मश्वरे (परामर्श) जरूर दें।

अल्लाह का शुक्र है कि "सच्चा राही" २१०० छपता है और एक पर्चा भी नहीं बचता फिर भी अभी खरीदारों से उसका पूरा खर्चा नही निकल पाता है, अन्दाजा है कि कम से कम २५०० खरीदार बन जाएं तो यह अपने पैरों खड़ा हो जाएगा। हम अपने पाठकों से अनुरोध करते है कि इस जानिब तुवज्जुह दें तो बड़ी आसानी से हम तीन हजार तक पहुंच सकते हैं। और हमें पूरी उम्मीद है कि हमारे कारिईन जरूर इस तरफ तवज्जुह करेंगे। अब तक तो यह तजरिबा रहा है कि हर हिन्दी जानने वाला मुसलमान जो सच्चा राही देखता है और उस को कोई तंगी नहीं है तो वह इसका खरीदार बन ही जाता है। हमारे कई हिन्दू भाई भी इस के खरीदार हैं। अगर आप ऐसे मुसलमान को यह मैग्जीन दिखाएंगे जो हिन्दी जानता है, और तंगी में नहीं है तो वह इन्शा अल्लाह ख़रीदारी मंजूर ही कर लेगा बस आप की तवज्जुह की जरूरत है।

हम सच्चा राही के कवर पर लिखते हैं "सामाजिक साहित्यिक"(मुआशरती और अदबी) हमारा अनुमान है कि सामाजिक विषयों में तो हम काम्याब चल रहे है और हम को यकीन है कि हम इस मैदान में तरक्की करते जाएंगे। अल्बत्ता अदबी मैदान में हम अभी खुद अपनी कसौटी पर पूरे नहीं उतर रहे हैं। जाहिर है एक हिन्दी लेखक हिन्दी लिखेगा। लेकिन बराबर खत आ रहे है कि सरल लिखिये, हम अपने लेखकों से अनुरोध कर के सरल लिखवाते हैं। फिर खुतूत आते हैं कि आप हमारी सकाफत न बदलये हम को नाश्ते के बजाए जल पान न करवाइये, तशरीफ रखने के बजाए पधारिये कहना न सिखाइये, तक़रीर के बजाए भाषण न करवाइये, जहमत पर मुआफी मांगिये, कष्ट के लिये क्षमा न मांगिये, शुक्रिया अदा कीजिये, धन्यवाद न कहिये। हम लोग अजीब कशमकश में हैं। हमारे पाठक ६६ फीसद मुसलमान हैं अगरचि उनका लिखना पढ़ना हिन्दी में है मगर उनकी एक खास सकाफत (विशेष संस्कृति) है जो उन्हें महबूब (प्रिय) है और उनकी यह सकाफत बदल नहीं सकती इस

लिये कि वह उनके दीन इस्लाम की देन है इस लिये उनके लिये सामाजिक विषय पर लिखने वालों के लिये अपने साहित्य में बदलाव लाना पड़ेगा। वह अपने रब की हम्द और अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नअ़त वही पसन्द करेंगे जिस में अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अ़रबी नाम और कुर्आन व हदीस के अरबी अल्फाज पाये जाएंगे। इस सिल्सिले में कोशिश बराबर जारी है और जल्द ही "सच्चा राही" के मजामीन एक नये अदब (साहित्य) को वजूद बख्शेंगे।

सच्चा राही के स्टाफ तथा उसके जिम्मेदारों का परिचय

सम्पादक "डाक्टर हारून रशीद" सहायक "मुहम्मद गुफ्रान नदवी, मु० सरवर फारूकी नदवी, मुहम्मद हसन अन्सारी और हबीबुल्लाह आजमी के नाम तो बराबर पहले पृष्ठ पर छपते हैं। मुद्रक तथा प्रकाशक जनाब अतहर हुसैन साहिब का नाम भी पहले पेज पर रहता है। इनके अलावा निम्न लिखित हजरात की भी तवज्जुह और कोशिशों से "सच्चा राही" आप तक पहुंचता है।

१. जनाबे मौलाना मुहम्मद हमजा़ हसनी नदवी संरक्षक
२. जनाब मास्टर अतहर हुसैन साहिब मुद्रक, प्रचारक तथा सिक्रेटरी
३. जनाब मुईद अशरफ साहिब मैनेजर
४. जनाब नियाज अहमद साहिब फीस कलेक्टर
५. जनाब मोहम्मद सलमान अन्सारी साहिब कम्पोजीटर
६. जनाब मसीहुज्जमा साहिब डेकूरेटर
७. जनाब हुसैन अहमद साहिब एडरेस सेटर
८. जनाब मुहम्मद उमर साहिब डिस्पैचर
९. जनाब मु० मुर्तजा साहिब डिस्पैचर

सच्चा राही के यह सभी मुतआल्लिकीन अपने तमाम पाठको को "सच्चा राही" के नये साल की मुबारकबाद देते हैं और बेहतर कार कर्दगी की दुआ की दरख्वास्त करते हैं।

सच्चा राही में बहुत से अक्षरों के नीचे आप बिन्दी पाएंगे जो हिन्दी अक्षरों के अंश नहीं है। यह उर्दू के उन अक्षरों की ओर संकेत है जिन का उच्चारण हिन्दी में नहीं है। इसी तरह बाज़ उर्दू अल्फ़ाज़ का इम्ला हिन्दी में प्रचलित इम्ला से अलग पाएंगे जैसे हिन्दी वाले दुनिया, बुनियाद ख्याल, ज्यादा आदि लिखते हैं, जब कि हम शुद्ध उच्चारण के लिए दुन्या, बुन्याद, ख्याल, जियादा आदि लिखने की कोशिश करते है। इसी तरह इल्म, उलूम उलमा और ऐब व उयूब आदि को अ़िल्म, अुलूम, अुलमा, अैब, अुयुब लिखने की कोशिश करते हैं। कभी इ, उ, ऐ के नीचे भी बिन्दी डालकर अैन अदा करवाते है जैसे इ़ल्म, उ़ल्म, ऐ़ब आदि, बड़ी मुश्किल अैन साकिन में आती है जैसे बाज़ और बाद लिखने में इसमें कभी आ की मात्रा के नीचे बिन्दी दी जाती है कभी अ के नीचें बिन्दी और हलन्त लगाया जाता है जैसे बा़द, बा़ज़ या बअ़द बअ़ज़। इस विभिन्नता तथा जिद्दत (नूतन्ता) से कुछ पाठकों को ना गवारी हो रही होगी लेकिन हम अपने पाठकों को उर्दू शब्दों के शुद्ध उच्चारण से अवगत करने के उद्देश्य से ऐसा करते हुए उनसे क्षमा चाहते हैं। रही विभिन्नता कि एक ही शब्द कभी किस तरह कभी किस तरह इस पर मैग्जीन में काबू पाना मुश्किल है। पुरूफ रीडिंग में बाज़ गलतियां रह जाती है जिन के लिये हम क्षमा चाहते हैं। आप के परामर्शों का हम हमेशा स्वागत करेंगे।

□□□□□

इस्लामी लिबास

मु० नईम अख्तर मंसूरी

अल्लाह तआला ने अपने फज्ल व करम से हम को इन्साल बनाया फिर ईमान व इस्लाम की दौलत से नवाजा यह उसका बड़ा इन्सान और बड़ा ही करम है। ईमान व इस्लाम का तकाजा (मांग) है कि हम अपना जाहिर व बातिन दोनों ठीक रखें। हमारा लिबास भी इस्लामी हो। मर्दों का लिबास औरतों जैसा न हो इसी तरह लिबास इतना हलका न हो कि शर्म वाले अंग साफ दिखें; मर्दों के कपड़े टखनों से नीचे न हों। औरतों के कपड़ों से पूरा जिस्म ढक जाए सर का कोई बाल भी न दिखे औरत को चाहिए कि सातिर लिबास के ऊपर भी चादर ओढ़े या निकाब पहने। सीने पर ओढनी डालने का हुक्म तो कुर्आन मजीद में मौजूद है। देखिये तर्जुमा सूर–ए–नूर आयत ३१।

इन्तिहाई बेशर्मी और अफसोस की बात है कि आज कल कितने ही नवजवान लड़के टाइट पैन्ट और ऊंची शर्ट पहन कर अपनी माओं बहनों के सामने बे हिचक आते जाते हैं। इसी तरह नवजवान लड़कियां चुस्त लिबास पहन कर अपने बाप भाई ही नहीं गैर मर्दों के सामने बे तकल्लुफ आती हैं। यह बड़े ही गुनाह की बात है। इस्लामी लिबास से दूरी भी और बे पर्दगी भी।

मुहतरम भाइयो और बहनो।

आप का मजहब इस्लाम सच्चा मजहब है सत्य धर्म है। इस की तहजीब व सकाफत शराफत वाली है। इस्लाम के खिलाफ जदीद तहजीब, नंगे पन की तहजीब है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम के खिलाफ है और अल्लाह तआला को पूरी तरह अपनाओ अल्लाह का हुक्म है : ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो, शैतान के पीछे मत चलो वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(सूर–ए–बकरः आयत २०८)

इस्लाम और मानव अधिकार

मुफ़्ती एहतिशामुल हक़

दुन्या बार बार अमन, सलामती तथा शान्ति व मानव अधिकार का नाम लेने के बावजूद अत्याचार व जियादती और अशान्ति में जिस प्रकार फंसी हुई है, वह कोई ढकी छुपी हुई बात नहीं है। आज दुन्या के कोने कोने में कत्ल रक्तपात से मानवता जिस तरह कांप उठी है, उससे कोई मानव इन्कार नहीं कर सकता। काश सत्ताधारी इसके सही कारणों की खोज करते और इस्लाम की अमन व शान्ति व्यवस्था का ध्यान पूर्वक अध्ययन करते तो अमन व शान्ति की सही तस्वीर उनके सामने आ जाती और मानव अधिकार की गम्भीर समस्या हल होकर दुन्या की बहुत सी गुत्थियां सुलझ जातीं और आज दुन्या शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल हो जाती।

यह सब जानते हैं कि जिस समय इस्लाम एक विधान एक मुकम्मल जीवन शैली के रूप में दुन्या के सामने पेश किया गया, उस समय पूरी दुन्या बरबादी की तमाम सीमाओं को पार कर चुकी थी। यहां इंसान अपनी इंसानियत को खो चुका था और अमन व शान्ति और एक दूसरे के अधिकार देने दिलाने का नाम भी मिट चुका था। रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस गम्भीर अवसर पर इंसानो का जिस प्रकार मार्ग दर्शन किया और इंसानियत के मुर्दा जिस्म में जिस खूबी के साथ जान डाल दी वह अपनी मिसाल आप है। आप (सल्ल०) ने अमनो अमान और मानव अधिकार की बहाली के लिए आंशिक सुधार पर संतोष न किया बल्कि मानव अधिकार के अंतराष्ट्रीय विधान (मंशूर) से परिचित कराया जिसकी एक व्यापक रूप हज्जतुल विदाअ़ के वक्तव्य की सूरत में आज तक दुन्या के सामने है।

मानव अधिकार का हनन कहें या अमन व शान्ति की बदहाली, यदि आप संसार के इतिहास को सामने रखकर गौर करेंगे तो इसका मुख्य कारण यही नज़र आएगा कि लोग दूसरे का अधिकार देने के लिए तैयार नहीं है जिनकी वह दूसरे से मांग करते हैं। इसको इंसान के संकीर्ण विचारों (तंगनज़री) का भी नाम दिया जा सकता है जो कभी धार्मिक रंग लेकर दूसरों का हक़ छीन लेता है, तो कहीं यह रंग व नस्ल का रूप धारण कर लेता हैं कभी यह ताकत और कमजोर की समस्या बनकर युद्ध के मैदान को गर्मा देता है और कभी यह वतन और देश की सीमाओं के पक्षपात में मुब्तला कर के मानवता का खून चूस लेता है।

मानव अधिकार का इतिहास और उत्थानः मानव अधिकार का वास्तविक इतिहास तो इतना ही पुराना है जितना मानव जाति का अपना इतिहास है। पश्चिमी दुन्या के वासी यूं तो पूरी मानव जाति के "मानव अधिकार" के दावेदार हैं परन्तु वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। पश्चिमी दुन्या में मानव अधिकार के बारे में चन्द कानून बयान किये गये हैं जिनमें संयुक्त राष्ट्र के "मानव अधिकार आदेश पत्र" और अमेरिका के "दस संशोधन" अधिकार बयान करने योग्य हैं। परन्तु यह सब के सब काल्पनिक, क्षेत्री और जाति सम्बन्धी कानून हैं जो उनके अपने विशेष क्षेत्री, समाजी और राजनीतिक परिस्थियों की पैदावार हैं।

पश्चिमी दुन्या की मानवअधिकार की ऐतिहासिक यात्ना तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ से शुरू होता है चुनानचः मैगना काटी का दस्तावेज (बंधक पत्र) दिनांक १५ जून १२१५ को जारी की गई। इसके पूर्व पश्चिमी दुन्या मानव अधिकार की कल्पना से नितांत खाली नजर आती है। संयुक्त राष्ट्र का "मानव अधिकार कार्टर" वास्तव में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुतब–ए–हज्जतुल विदाअ़ (अंतिम हज्ज के वक्तव्य) की रूपरेखा है तथा इन तमाम पश्चिमी कार्टर के पीछे कोई शक्ति भी कार्यरत रहीं है।

इसके विपरीत इस्लामी दुन्या काफी समय पहले से मानव अधिकार की कल्पना से न केवल अवगत करा रही थी बल्कि इसके पास इस का स्पष्ट आदेश पत्र (मनशूर) इसको लागू करने के लिए शक्ति, खुदा के भय की बुन्यादों पर कायम तथा स्थापित था चुनानचः मानवता के महान उपकारी तथा संसार के महान कृपालू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुतब–ए–हज्जतुलविदाअ़ के दौरान यह हुक्मनामा पेश करके इसे व्यवहारिक रूप में लागू भी फर्माया। खुतब–ए–हज्जतुलविदाअ़ ६, १०,

जिलहिज्जा शुक्रवार के दिन अर्थात ६ मार्च ६३२ इ० को इंसानी हुकूक़ (मानव अधिकार) का इस्लामी हुक्म नामा जारी किया गया। यह सातवी सदी के प्रारम्भ की बात है। मानव अधिकार के ऐतिहासिक धाराएं जो पैगम्बरे इस्लाम सल्ल० ने खुतब–ए–हज्जतुलविदाअ़ की हमागीर (सर्व व्यापी) दस्तावेज मानव अधिकार में मानवता के सम्मान और अधिकारों की सुरक्षा लागू करने के सिलसिले में जारी कीं वह पश्चिमी दुन्या के मानव अधिकार कार्टर के प्रारम्भ और उत्थान तक तमाम मानव अधिकारों के आदेश पत्रों और दस्तावेजों से बढ़कर है।

इस मिसाली और ऐतिहासिक खुतबे में आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मानवता के नाम "मानव अधिकार आदेश पत्र" का केवल रस्मी (परम्परागत) फर्मान जारी करने पर ही बस नहीं किया बल्कि इस की सुरक्षा और उस पर व्यवहारिक अमल के लिए प्रभावी और सुदृढ़ अमली कदम उठाकर अपने पवित्र जीवन काल मे अपने कायम करदा मदनी समाज में उसे व्यवहारिक रूप से लागू फर्माया।

पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुतब–ए–हज्जतुलविदा को इस लिहाज से भी प्रधानता प्राप्त है कि आप (सल्ल०) का प्रदान किया हुआ मानव उपदेश पत्र हमेशा के लिए और अंतराष्ट्रीय हैसियत रखता है।

पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् केवल अरबों के पैगम्बर नहीं थे बल्कि वह पूरे संसार के पैगम्बर बन कर दुन्या के मार्गदर्शक और मानवता के नेतृत्व के लिए विश्वव्यापी (आलमगीर) दीने इस्लाम और अंतकालीन शिक्षा लेकर दुन्या में तशरीफ लाए।

आप (सल्ल०) ने मानव जाति को अधिकार और कर्तव्य जो मिसाली और सर्वव्यापी आदेश पत्र मानव संसार के लिए है। वह पश्चिम के मानव अधिकार के दृष्टकोण की तरह केवल कल्पना और अनुमान व विचार पर बनाया हुआ विधान नहीं है बल्कि वह इंसानों को पैदा करने वाले का इंसानियत के उपकार व भलाई की जमानत देने वाला मंशूर (आदेश पत्र) है। वह न तो पश्चिम अधिकार की कल्पना की तरह क्षेत्र, वतनीयत, कौमियत और अमुक कौमों की सुरक्षा का विधान है, न तो इसमें केवल एक विशेष रंग व नस्ल की कौमों को अधिकार प्रदान करके उनके हितों की रक्षा की गई है।

यह ऐतिहासिक और तुलनात्मक समीक्षा इस ऐतिहासिक और वास्तविकता का प्रदर्शन है कि महान मानव उपकारी अरब व अजम के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मानव आदेश पत्र "खुतब–ए–हज्जतुलविदाअ़" सर्वव्यापी होने की हैसियत, बल्कि हर पैमाने के लिहाज से मनुष्यों द्वारा बनाए गए मानव अधिकार के कानून पर अनंतकालीन व ऐतिहासिक प्रधानता रखता है और इस सच्चाई से इन्कार सम्भव नहीं कि मानव अधिकार का सबसे पहला, प्रपूर्णतम (जामेअ़तरीन) उत्तम प्रभावी, मिसाली और अद्वितीय व्यवहारिक आदेश पत्र है।

इस्लाम के मानव अधिकार का व्यापक विचार:

इस्लाम के मानव अधिकार के व्यापक विचार का हम निम्नलिखित कुछ बुन्यादी (मूल) शीर्षक के हवाले से एक सारांश पेश करेंगे:–

१. व्यक्तिगत अधिकार (इनफ़िरादी हुकूक़)

२. समाजी अधिकार

३. आर्थिक अधिकार

४. राजनीतिक अधिकार आदि

इस्लाम ने एक सदाचारी जीवन व्यवस्था की रचना जिस सुन्दर ढंग से की है उसका चित्र कुछ इस प्रकार है कि इंसानी तर्बियत व तालीम के कुछ पक्षों को उचित व अनुचित के दर्जे में रखकर उनको तर्ग़ीब (प्रेरणा) व तर्हीब (डराना) का पहलू इख्तियार किया है और उसे खुदा के खौफ़ और जिम्मेदारी के एहसास का एक ऐसा शीर्षक दिया है कि व्यक्तिगत तौर पर आज़ाद रहते हुए व्यक्ति को कोई हानि नहीं पहुंचती है और कानूनी तौर पर इस्लामी शरीअ़त (धर्म विधान) ने व्यक्ति को अख्लाकी (नैतिक) दाएरे में रहते हुए भांति भांति की आजादियां दे रखी हैं फलस्वरूप इंसानों की व्यक्तिगत व सामूहिक जीवन शान्ति की गोद में प्रफुल्लित रहता है। हम मानव अधिकार के निम्न हवालों से कुछ तथ्य पेश करते हैं:–

धार्मिक आजादी:

"दीन के मुआमले में कोई जबर्दस्ती नहीं। बेहतरी की बात गलत बातों से छांट कर रख दी गई हैं" (अनुवाद–सूरःबकरा २५६)

इस्लाम ने यह तरीका पसन्द किया है कि लोग दलील और हुज्जत (तर्क) से सही और गलत को समझ लें न कि बल प्रयोग तथा जोर जबर्दस्ती से ईमान लाएं। चुनानचः कुर्आन में कहा गया है–

"अगर तुम्हारा रब चाहता तो जमीन के तमाम लोग ईमान लाते, तो क्या आप लोगों को मजबूर करेंगे कि ईमान ले आएं" (सूरः यूनुस –९९)

आयत साफ बतला रही है कि अल्लाह तआला बन्दों को ईमान लाने की तर्गीब (प्रेरणा) के साथ साथ उन को यह आजादी भी देते हैं कि वह ईमानदार बनें या न बने वह आज्ञा पालन करे या करें। यह बात अलग है कि इस आजादी से गलत लाभ उठाने वालों को आख़िरत में नुकसान का भय यकीनी है।

दुन्या जानती है कि दीन के मुआमले में किसी को इस्लाम को स्वीकार करने के लिए जबर्दस्ती नहीं की जाती बल्कि दीन स्वीकार करने के बारे में व्यक्ति को पूरी आजादी दी गई है। जिस दीन की सच्चाई सूर्य के समान रौशन हो, उसको स्वीकार करने पर किसी को मजबूर करने का प्रश्न ही नहीं उठता प्रसिद्ध मुफस्सिर (व्याख्या कार) व इतिहास कार अल्लामः इब्ने कसीर ने अपनी तफसीर (व्याख्या) १. ३१२ में लिखा है

"बनुसालिम बिन औफ़ के कोई अंसारी महापुरूष मुसलमान हुए थे। उनके दो लड़के ईसाई थे। वह नबी की सेवा में उपस्थित हुए और पूछा क्या मुझे हक़ हासिल है कि मै अपने दोनों लड़कों को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर करूं? इस प्रश्न के उत्तर में आयत "लाइकराह फिद्दीन"(दीन में कोई जोर जबर्दस्ती नहीं) नाज़िल हुई।

यहां पर हम मजहबी रवादारी य मजहबी आजादी के हवाले से निम्न घटना का हवाला देना आवश्यक समझते हैंः–

"बैतुल मुकदस की विजय के समय हजरत उमर रजि० का अखलाक साबित करता है कि इस्लाम के विजयता प्राप्त कौमों के साथ क्या नर्म व्यवहार करते हैं और यह सद व्यवहार उन आदर सतकार के मुकाबले में, जो ईसाईयों ने इस नगर के बासियों के साथ कई सदी बाद की, बहुत ही आश्चर्य जनक मालूम होता है...

उस समय हजरत उमर ने मुनादी करा दी कि मैं जिम्मेदार हूं कि नगर वासियों के माल और उनके पूजा घरों की रक्षा की जाएगी और मुसलमान ईसाई गिरजा घरों में नमाज़ पढ़ने का अधिकार प्राप्त नहीं होंगे। (तमद्दुने अरब पृष्ठ १३१,१३२)

जो व्यवहार अम्र बिन आस ने मिस्रियों के साथ किया वह इससे कम न था। उन्होंने मिस्र के निवासियों से वादा किया कि पूरी धर्मिक स्वतंत्रता, पूरा न्याय, बिना पक्षपात और जायदाद की मिलकियत के पूरे अधिकार दिये जाएंगे और उन अत्याचारी और असीमित कर जो उनसे वसूल किये जा रहे थे, जो यूनान के बादशाह उन से वसूल कर रहे थे, की जगह एक मामूली सालाना जिज़्या लिया जाएगा जिस की मात्रा प्रति व्यक्ति दस रूपया थी (तमद्दुने अरब पृष्ठ १३२)

"अरबों ने अपनी प्रजा के साथ निहायत इंसाफ व इंसानियत का व्यवहार किया और उनको पूरी धार्मिक आजादी दी।

उनके शासन काल में पश्चिमी तथा पूर्वी कलीसा के रईसुल अस्क़ाफ़ (Head of the Priests)को इस कदर आराम मिला जो उन्हें उस समय कदापि प्राप्त नहीं था।"

(तमद्दुने अरब पृष्ठ १४८)

मानव सम्मान व प्रथिष्टा की सुरक्षा का अधिकारः–

इस्लाम ने एक दूसरे के आत्म सम्मान को अज़ीयत पहुंचाने को बड़ा जुर्म करार दिया है। किसी इंसान के दिल को दुखाना, बिना किसी प्रमाणित कारण के किसी से बदगुमानी (बुरी धारणा) करना, किसी की इज़्ज़त पर हमला करना, किसी की बुराईयां अकारण बयान करना और ऐसे सैकड़ों विषय है जिन में से किसी को अख्लाकी (सदाचारी) और कुछ को कानूनी जुर्म करार दिया गया है। किसी सामान्य मानव समाज में किसी की इज़्ज़त व प्रथिष्टा को कायम रखना बहुत बड़ा मानव अधिकार है जिसकी इस्लाम ने भरपूर ज़मानत दी है। कुर्आन मजीद की सूरः हुजरात में हैः–

"ऐ लोगों ! जो ईमान लाए हो न मर्द का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वह उन से बेहतर हों। आपस में एक दूसरे पर तअ़न (व्यंग) न करो और न एक दूसरे को बुरे अल्क़ाब (उपधि)से याद करो"

इस्लाम ने एक निर्देश दिया है कि हर इंसान का आत्म सम्मान अपनी जगह पर उसी समय क़ायम रह सकता है जब आप दूसरे के आत्म सम्मान का ध्यान रखेंगे अर्थात व्यक्तिगत अधिकार का ज़ामिन (ज़मानतदार) बन सकता है। चुनानचः मस्नद अहमद अबू दाऊद में हदीस हैः–

अनुवाद "हुस्नेज़न (किसी के बारे में अच्छे विचार) रखना बेहतरीन इबादत है"। द्वेष, हसद और पीठ पीछे बुराई से बचना या बचाना वह व्यक्तिगत अधिकार हैं जिन से न केवल अपनी इज़्ज़त व प्रतिष्ठा की रक्षा होती है बल्कि इन निदेर्शों पर अमल करते हुए बहुत सारे सामूहिक अधिकारों की भी रक्षा होती है।

अरब खाड़ी का एक देश

बहरैन

मु० गुफरान नदवी

अमीर (अध्यक्ष): शेख हम्माद बिन ईसा अल, खलीफा (१९९९) प्रधान मंत्री: शेख ख़लीफ़ा बिन सलमान अलखलीफा (१९७०) क्षेत्रफल:२५७ वर्ग मील (६६५ वर्ग किलोमीटर)

आबादी: ६७ लाख लगभग पैदाइश की शरह: १९ प्रति हजार, बच्चों की मौत की शरह: १८.६ प्रति हजार,

गुनजानी आबादी: २६०० प्रति वर्गमील

राजधानी: मनाम: (शहर की आबादी १.५ लाख), (जिले की आबादी ६ लाख के करीब)

क्रन्सी: दीनार — १००० फुलूस ज़बाने (भाषाऐं) अरबी (सरकारी) फ़ारसी, उर्दू, अंग्रेजी,

मजहब: इस्लाम, पढ़ाई की शरह: ७७ प्रतिशत, सामोहिक राष्ट्रीय पैदावार: ४.८ अरब डालर वार्षिक, प्रति मनुष्य आय: १३ हजार वार्षिक, बेरोजगारी: १५ प्रतिशत

खेती योग्य क्षेत्र : ५ प्रतिशत—खनिज पदार्थ : तेल, कुदरती गैस

पैदावार: फल, सबजियां, पोलटरी, मछली, खजूर, तेल, कुदरती गैस, व्यवसाय: पिटरौलियम, एलोमेनियम मछली पकड़ना, तेल की सफाई पर्यटन,

व्यवसायिक साथी: भारत सऊदी अरब, जापान, दक्षिणी कोरिया, अमरीका, बरतानिया, फ्रांस,

प्रायद्वीप अरब के पूर्वी तट के साथ फारस की खाड़ी में ३० द्वीपों पर सम्मलित एक छोटा सा राज्य है कुल क्षेत्र २५७ वर्ग मील है सबसे बड़ा द्वीप बहरैन ३० मील लम्बा और १० मील चौड़ा है, उत्तर पूर्व में अलमुहर्रक एक चार मील लम्बा एक मील चौड़ा है। उसे डेढ़ मील लंबे पुश्ते के जरये राजधानी मनामा से मिला दिया गया है, बहरैन के पूरब में ३ मील लम्बा द्वीप "सतरह" है जो तेल की गोदी के तौर पर इस्तेमाल होता है, इनके अलावह 'उम्मुस्सबान' 'अन्नबी सुवालेह' जद्दा और अननआसान के द्वीप है।

बहरैन की मौजूदा आबादी लगभग ६७ लाख है यह इस्लामी सरबराह कान्फ्रेन्स की संस्था (ओ, आई, सी) और संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है राजधानी:—मनामा बहरैन की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है, बहरैन द्वीप के उत्तर पूर्वी कोने पर स्थापित है। पुरतकीजी और ईरानी यहां काबिज रहे हैं अंग्रेज पोलीटिकल रेजीडेन्ट उसे अपने हेडकुवाटर के तौर पर इस्तेमाल करता आया है

तेल निकलने से पहले यहां का सबसे बड़ा कारो बार समुद्र से सीप निकालना था, लगभग ५०० किशतियां (नौकाएं) रोजाना इस काम में लगी रहती थी, उस जमाने में बड़े समुन्दरी जहाजो को साहिल (किनारा) से लगभग चार मील दूर ठहरना पड़ता था, अब गिनती की थोड़ी किशतियां (नौकाएं) मोती निकालने का काम करती हैं मछली पकड़ने का काम आज भी बहुत से लोगों की रोजी रोटी का ज़रया है, मनामा (व्यवसायिक केन्द) है, जहां दुन्या के बड़े बड़े बैंक अपना करोबार करते हैं, बहरैन पिटरोलियम कंपनी "CAPCO" का हेड कुवारटर बहरैन द्वीप के बीचो बीच एक शहर 'अल—अवाली" मे है। मनामा को १९५८ में "आज़ाद बन्दर गाह" (फिरीपोर्ट) करार दिया गया है। १९६२ ई० में "खोरूल कलीअह" खाड़ी में बन्दरगाह सलमान अब पूरे तौर पर तैयार है जहां अब बड़े जहाज ठहर सकते हैं। मनामा के बाद अलमुहर्रक बहरैन का दूसरा बड़ा शहर है।

एतिहासिक बैक ग्राउन्ड : बहरैन के अरब वासियों के प्रारंभिक इतिहास के बारे में ज़ियादह मालूमात नहीं मिलती पिछले एक सौ साल से खोज करने वाले उसके प्राचीन इतिहास का खोज कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई निर्णयपूर्वक बात नहीं कह सके, सिर्फ़ अटकल पच्चू बाते कहीं हैं।

अरब के जन साधारण कथाओं मे बहरैन के कुछ गुम शुदह कबाएल का जिक्र मिलता है, रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में बहरैन की आबादी में बनूअदनान के क़बीले अ़ब्दुल कैस की अकसरियत (बहुमति) थी, आँहजरत (स० अ० व०) के जब अल—अ़ला बिन अल—हज़रमी को पूरब की तरफ युद्ध के लिये भेजा तो उस समय बहरैन एक ईरानी शासक के अधीन था।

पहली सदी हिजरी (सातवीं सदी ईसवीं) में खारजी (एक सम्प्रदाय का नाम) यहां कदम जमाने में कामयाब हो

गए, खारजियों ने नजदह बिन आमिर और अबू फुदैक की क़ियादत (नेतृत्व) में अपनी हुकूमत का मरकज (केन्द्र) क़ायम किया, उनके काल में ईसाई और यहूदी अधिक उन्नति पर थे, आठवीं सदी ईसवी में यहां अब्बासियों की हुकूमत क़ायम (स्थापित) हुई, उनके जमाने में करामिता का फितना (उपद्रव) उठा, १०५८ ईसवी तक बहरैन क़रामिता के क़बज़े में रहा १०५६ ईसवीं अबुल बहलौल अल अवाम ने क़रामिता को फैसलाकुन शिकस्त (निर्णायक प्राजय) देकर अब्बासी खलीफा के नाम पर दुबारा सही हुल अक़ीदा (शुद्ध विश्वास) इस्लामी हुकूमत कायम (स्थापित) की, १२३५ ईसवी में बहरैन और क़तीफ़ पर फारस के सलगरी अताबुक अबू बक्र बिन सअद की फौज ने कबजा कर लिया, कुछ दिनों बाद आमिर बिन रबीअः की एक शाख बिन उस्फूर के तहत (अधीन) बहरैन आजाद हो गया, १३३० ई० में यह द्वीप हुरमुज के शासकों के राज्य में शामिल (सम्मलित) कर लिया गया, १५१४ ई० में पुरतगाली बहरैन पहुंचे और उस पर मुसल्लत (व्याप्ति) हो गये, और १६०२ ई० तक वह उस पर काविज रहे, उस्मानी समुद्री बेड़े ने पुरतगालियों को यहां से निकाल बाहर किया, लेकिन उस्मानी अपना मुस्तक़िल कब्जा बरकरार न रख सके तो शाह अब्बास प्रथम के काल में ईरानियों ने बहरैन पर कब्जा कर लिया, वह लगभग १५० साल तक यहां काविज रहे।

इरानियों ने ईरान के तट पर आबाद अरबी वंश जब्बारह और आले नस्र के जरये बहरैन पर हुकूत की, १७८३ ई० में अलहसा के अरब सूबे (प्रान्त) के शेरव अहमद बिन खलीफा ने आले नस्र को बहरैन से निकाल दिया और वहां खानदान खलीफा की हुकूमत (शासन) कायम कर दिया। आज तक यही हुकूमत कायम (स्थापित) है, कीमती मोतियों की तिजारत (व्यापार) पर मसक़त वालों का कब्जा हो गया था, चुनांचि बहरैन वालों ने उनसे तिजारती मुकाबला (व्यापारिक प्रतियोगिता) शुरू किया, इसी कारण मसकत के अबाजी शासक ४५ साल तक बहरैन पर कब्जा करने की कोशिश करते रहे, उन्होंने बहरैन पर पहला हमला (आक्रमण) १८०१ ई० में किया था।

आले सऊद ने आले खलीफा का साथ दिया लेकिन इन दोनों शासक खानदानें मे जियादह समय तक न बन सकी।

आखिर मे आले खलीफा ने १८२० ई० में ब्रिटिश साम्राज्य से सन्धि किया जिसके अनकूल बहरैन पूर्ण रूप से ब्रिटिश के अधिकार में चला गया, मिसरियों, ईरानियों जरमनों और रूसियों के बढ़ते हुये प्रभाव को रोकने के लिये ब्रिटिश ने १८२० ई० में बहरैन से एक सन्धि की, १६१४तक बहरैन पूर्ण रूप से ब्रिटिश के अधीन हो गया, १६३२ ई० में यहां तेल का पता चला जिसके कारण उन्नति और समृद्धि का नवयुग प्रारम्भ हुआ।

१६४६ ई० में ब्रिटिश के पोलीटेकल रेजीडेन्ट का हेड आफिस बूशहर (ईरान) से बहरैन ट्रान्सफर हुआ। १६७० ई० तक ईरान बहरैन पर अपने कब्जे का दआवह करता रहा।

५ अगस्त १६७१ ई० को मुकम्मल आजादी मिलती है, सितंबर में बहरैन संयुक्त राष्ट्र और अरब लीग का सदस्य बनता है।

१६७३ ई० में नया कानून लागू हुआ और दिसम्बर में एसंबली के जनरल एलक्शन हुये।

१६७५ ई० में अमीर बहरैन शेख सलमान खलीफ तुल खलीफा और प्रधान मंत्री के बीच अधिकारों का झगड़ा खड़ा हुआ तो अगस्त १६७५ ई० में अमीर ने राष्ट्रीय एसंबली भंग कर दी। १६७६ ई० में बहरैन को अन्तर्राष्ट्रीय पारलीमानी यूनियन से निकाल दिया गया। १६८१ ई० १६ दिसम्बर को बगावत (विद्रोह) के जरिये शासन पर कब्जा करने की साजिश (षड़यंत्र) हुई सऊदी अरब और यू० ए० इ० की सीकोरिटी की उचित समय की सूचना से बगावत (विद्रोह) के सरगना (लीडर) गिरफ्तार कर लिये गए, उनका संबन्ध अन्डर–ग्राउन्ड सस्था इस्लामी फ्रन्ट बराए "आजादि–ए–ईरान" से था।

दिसम्बर १६८७ ई० में बहरैन के तीन नागरिक ईरान के लिये जासूसी करते हुये पकड़े गये। अरब राष्ट्रवादी और बअस पार्टी अन्डरग्राउन्ड विद्रोह में लिप्त हैं। देश की अधिक जनसंख्या शिया है, बहरैन में ८५ प्रतिशत मुसलमान है जिनमें से ७० प्रतिशत शिया और ३० प्रतिशत सुन्नी है, जबकि शासक परिवार सुन्नी पन्थ से संबन्धित है, इस वजह से सुन्नी शिया झगड़ा अकसर रहता है, ईरान शिया आबादी की सहायता करता है, इसलिये मसअला (समस्या) और भी संगीन (गंभीर) रहता है, बहरैन अमेरिका और ब्रिटेन का करीबी हलीफ (सह प्रतिज्ञ) है, यहां अमरीका का हवाई, समुद्री, थली अड्डा है, १६६१ ई० के खाड़ी के

(शेष पृ. ४० पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

आतंकवाद के खिलाफ अमेरिका का युद्ध

अमेरिकी मुसलमानों की नज़र में आतंकवाद विरोधी जंग वास्तव में मुसलमानों के खिलाफ जंग है। एक सर्वे के अनुसार अमेरिकी मुसलमानों की तिहाई से अधिक आबादी अमेरिका की आतंकवाद विरोधी जंग मुसलिम विरोधी जंग समझती है। सर्वे के अनुसार ३८ प्रतिशत मुसलमानों की राय है कि अफगानिस्तान व इराक पर अमेरिकी हमला और इरान व शाम आदि देशों के खिलाफ अमेरिका का अन्यायपूर्ण व्यवहार एक ऐसी विदेश नीति का प्रर्दशन है जिसका निशाना केवल मुस्लिम देश हैं। जबकि ३३ प्रतिशत अमेरिकी मुसलमानों का विचार है कि उसका निशाना मुस्लिम देश नहीं हैं। २९ प्रतिशत की कोई राय नहीं है।

इसराईल का दिमाग

इसराईल अचानक ऐटमी ताकत नहीं बन गया।१९४८ में जब इसराईल की स्थापना हुई तो तमाम जिम्मेदारियां संभालने के लिए विशेषज्ञों की एक फौज मौजूद थी। कहा जाता है कि सभी विरोधों के बावजूद एक नवीन राज्य का कायम रहना इसलिये सम्भव हुआ कि हर चीज की तैयारी पहले से कर ली गई थी। इस तैयारी का एक हिस्सा था हेबरू विश्वविद्यालय की स्थापना। पूर्वी बैतुलमुक़द्दस में स्काऊपस पहाड़ी पर इस विश्वविद्यालय का निर्माण १९२५ में पूरा हुआ और इसराईल की स्थापना के २२ वर्ष पूर्व ही यहां पठनपाठन प्रारम्भ हो गया। इबरानी भाषा को पुनः जीवित करने के लिए तमाम विषयों को पढ़ाने के लिए इसे माध्यम (जरीय–ए–तालीम) बनाया गया और ऐसे अध्यापक यहां लाए गय जिन्हें यूरोप की यूनीवर्सिटियों में लाखों डालर वेतन मिल सकता था। लेकिन प्रारम्भ में वह यहां एक मजदूर के बराबर वेतन लेकर पढ़ाते रहे। उस समय शायद अरब और मुस्लिम दुन्या ने इस अहितकर कदम पर ध्यान नहीं दिया। वर्तमान समय में इस विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान (Physics) अणु भौतिक विज्ञान (Nuclear Physics) रसायन शास्त्र (Chemistry) माइक्रो जीव विज्ञान (Micro Biology) आदि विषयों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का शोध (Research) किया जाता है और इस समय विश्वविद्यालय से तैयार होने वाले वैज्ञानिक संसार के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों और रिसर्च सेंटरों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। वास्तव में यहां होने वाले रिसर्च का स्तर इतना बुलन्द है कि उसे सभी वैज्ञानिक तस्लीम करते हैं। यहां संसार भर के देशों, भाषाओं और संस्थानों पर शोध कार्य भी जारी है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाईन के निजी प्रयोग में आने वाली वस्तुओं से लेकर उसकी किताबें और शोध की मूल पण्डुलिपियां (तहक़ीक़ी मस्विदे) इस विश्वविद्यालय में सुरक्षित रखे गये हैं। इस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में जहां ३५ लाख पुस्तकें हैं वहीं साहित्य, दवाओं और रसायन विज्ञान के इतिहास का अदभुत भण्डार भी मौजूद है। प्राचीन इबरानी लिखावट और पाण्डुलिपियां से हयूनी (यहूदी) आंदोलन के काय्र कर्ताओं और इस क्षेत्रों में आबाद होने वाले प्रारम्भिक यहूदियों से सम्बन्धित वस्तुओं का राष्ट्रीय भण्डार भी यहां है। इबरानी विश्वविद्यालय वास्तव में इसराईल का दिमाग है। इसराईल की स्थापना को सम्भव बनाने वाली यह संस्था आज इसराईल के स्थिर्ता और विस्तार की योजना में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

(पृष्ठ ३९ का शेष)

युद्ध में और फिर २००३ ई० में इराक के युद्ध में बहरैन, अमरीकी ब्रिटेनी सेनाओं का मजबूत सैनिक केन्द्र या, अमरीका के पांचवे समुद्री बेड़े का हेड कुवार्टर बहरैन है।

१९९९ ई० में शेख ईसा बिन सुलैमान अल–खलीफा निरन्तर चालीस वर्ष तक शासन करने के बाद वफात (देहान्त) पा गये, उनके बाद उनके बेटे शेख हम्माद बिन ईसा अल–खलीफा ने शासन की बागडोर संभाली, उन्होंने अपने बाप के शासन प्रणाली के विरूद्ध प्रजा तंत्र राज्य के समर्थक बने और कानून को नर्म किया, जिला वतन बाशिन्दों (निर्वासित निवासियों) को आम मआफी दी, बद दुओं को नागरिकता दी,

२००१ ई० फरवरी के रिफेरन्डम में महिलाओं को सर्वप्रथम मतदान का अधिकार दिया गया, परिवारिक शासन को वैधानिक साम्राज्य में परिवर्तित किया गया। अक्टूबर २००२ ई० में विधान के नियमानुसार सर्वप्रथम सांसद निर्वाचन हुआ।